दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

हिंदी विभाग

2nd year - (II year)

3 - sem - मेजर पेपर

हिंदी नाट्य साहित्य (मेजर)

Paper code = HHINCT-1201

डॉ. शिवकुँता रामकिसन सुरकुटे
हिंदी विभाग
दयानंद कला महाविद्यालय,
लातूर

मो. नं = 7776989158

પાઠ્યક્રમ (4 ક્રેડિટ)

1. નાટ્ય વિદ્યા કા સૈદ્ધાંતિક પક્ષ
   - 1.1. = નાટક કી અવધારણા
   - 1.2. = નાટક ઔર રંગમંચ
   - 1.3. = નાટક કે તત્ત્વ
   - 1.4. = નાટક કે પ્રકાર

2. એક ઔર દ્રોણાચાર્ય – શંકર શેષ (નાટક)
   - 2.1. = શંકર શેષ કા પરિચય
   - 2.2. = એક ઔર દ્રોણાચાર્ય : કથાવસ્તુ
   - 2.3. = એક ઔર દ્રોણાચાર્ય : ચરિત્ર-ચિત્રણ એવં પાત્ર
   - 2.4. = એક ઔર દ્રોણાચાર્ય : સમસ્યાએં ઔર ઉદ્દેશ્ય

3. રાવણ તુમ બાહર આઓ — (શંકર પુણતાંબેકર)
   - 3.1. = શંકર પુણતાંબેકર કા પરિચય
   - 3.2. = રાવણ તુમ બાહર આઓ : કથાવસ્તુ
   - 3.3. = રાવણ તુમ બાહર આઓ : ચરિત્ર-ચિત્રણ એવં પાત્ર
   - 3.4. = રાવણ તુમ બાહર આઓ : સમસ્યાએં ઔર ઉદ્દેશ્ય

4. વિશેષ રચનાકાર / નાટ્યકાર
   - 4.1. = ભારતેંદુ હરિશ્ચંદ્ર – સામાન્ય પરિચય
   - 4.2. = જયશંકર પ્રસાદ – સામાન્ય પરિચય
   - 4.3. = મોહન રાકેશ – સામાન્ય પરિચય
   - 4.4. = સર્વેશ્વર દયાલ સક્સેના – સામાન્ય પરિચય

नाटक का सैद्धांतिक पक्ष

"नाटक" संस्कृत शब्द "नट" से बना है, जिसका अर्थ होता है "अभिनय करना"। नाटक एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो अभिनय के माध्यम से जीवन की घटनाओं, संघर्षों, भावनाओं एवं सामाजिक प्रसंगों को मंच पर प्रस्तुत करती है। इसमें संवाद, अभिनय, दृश्य, मंच, पात्र आदि के माध्यम से कथा को जीवंत रूप दिया जाता है। नाटक एक साहित्यिक विधा है जो कथानक, पात्रों, संवाद और अभिनय के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को मंच पर प्रस्तुत करती है।

1 भरत मुनि के अनुसार (नाट्यशास्त्र):
"नाट्यम् भिन्नरुचेः जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।"
अर्थात: "नाटक विभिन्न रुचियों वाले लोगों का एक साथ समान रूप से मनोरंजन करने वाली कला है।"

2. अरस्तू के अनुसार (काव्यशास्त्र)
"नाटक जीवन की अनुकृति है (Imitation of Life)।"
उन्होंने नाटक को ट्रैजेडी और कॉमेडी में विभाजित किया और इसे मानवीय क्रियाओं का आदर्श प्रस्तुतीकरण माना।

3. पंडित रामचंद्र शुक्ल के अनुसार :
"नाटक काव्य की वह विधा है जिसमें संवाद और अभिनय के द्वारा किसी कथा या भाव को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।"

4. डॉ. नगेंद्र के अनुसार:
"नाटक एक ऐसी दृश्य-श्रव्य कला है जिसमें कथानक, पात्र, संवाद, अभिनय और दृश्यावली का समन्वय होता है।"

5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार:
"नाटक जीवन का संघर्ष है, जिसमें पात्रों के विचार, भाव और क्रियाएँ संवाद के माध्यम से व्यक्त होते हैं।"

6 " रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोंवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। "

"नाटक जीवन का अनुकरण है जो रंगमंच पर अभिनय के माध्यम से दर्शकों को आनन्द, विचार और संवेदना प्रदान करता है।" नाटक एक ऐसी साहित्यिक रचना है जिसे मंच पर अभिनय के रूप में

प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें संवादों के माध्यम से कथानक को दर्शाया जाता है और जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ भावनात्मक, सामाजिक या नैतिक संदेश देना होता है।नाटक मनोरंजन के साथ-साथ समाज को शिक्षित और प्रेरित भी करता है। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण नाटक को रूपक कहा जाता है। अभिनय के समय नट पर दुष्यंत या राम जैसे ऐतिहासिक पात्र का आरोप किया जाता है, इसीलिए इसे रूपक कहते हैं। नट अर्थात अभिनेता से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी ड्रामा या प्ले का पर्याय बन गया है। हिंदी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेंदु हरिश्चंद जी से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छायावाद युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। छायावादोत्तर युग में लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, डॉ. रामकुमार वर्मा, जगदीशचंद्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है।

नाटक के तत्व

साहित्यिक विधाओं की कुछ संरचनात्मक विशिष्टताएँ होती हैं जो एक दूसरे से अलग पहचान बनाती हैं तथा प्रत्येक विधा को उसका अपना निश्चित स्वरूप प्रदान करती हैं। नाटक मंचन की परंपरा दुनिया भर में प्राचीन काल से चली आ रही है। यही कारण है कि अधिकांश देशों के प्राचीन साहित्य में नाट्य लेखन प्रचुर मात्रा में हुआ तथा नाट्य सिद्धांतों की चर्चा काव्य सिद्धांतों की चर्चा के साथ-साथ ही शुरू हो गई। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि नाटक का स्वरूप परंपरा और प्रयोग के आधार पर निर्मित और रूपांतरित होता रहता। हिंदी नाटक की स्थिति भी ऐसी ही है इसके स्वरूप निर्माण में भारतीय और पाश्चात्य नाट्य दृष्टियों का योग रहा है। अतः भारतीय और पाश्चात्य नाट्य तत्वों की संक्षिप्त जानकारी आवश्यक है। भारतीय नाट्य सिद्धांत संस्कृत के नाटकों के आधार पर निर्मित हुए थे तथा पश्चिमी नाट्य सिद्धांतों का आधार यूनानी नाटक थे। भारतीय आचार्यों ने नाटक के तीन अनिवार्य तत्व माने हैं- वस्तु, नेता और रस। वस्तु का अर्थ है कथावस्तु, नेता यानी पात्र और रस यानी रचना से उत्पन्न होने वाले प्रभाव या उसकी अनुभूति। अर्थात् रचनाकार द्वारा अनुभूत सत्य की दर्शक अथवा पाठक को प्रतीति अथवा अनुभूति । पाश्चात्य आचार्यों ने नाटक के छः तत्व माने हैं कथावस्तु, पात्र, देशकाल, संवाद, शैली और उद्देश्य। इसके अलावा वहाँ संकलन-त्रय यानी नाटक में स्थान, समय और काल की एकता पर भी जोर दिया गया है। पश्चिम में सुखांत और दुखांत दो तरह के नाटकों का प्रचलन रहा है और पश्चिमी नाटक में द्वंद्व अथवा संघर्ष को प्रधानता दी गई और भारतीय नाटक में रसानुभूति को। नाटक के तत्वों के भीतर पश्चिम और भारतीय दोनों दृष्टियों का समावेश रहा है ।

1) कथावस्तु अथवा कथानक

नाटक की कहानी को 'कथावस्तु' या 'कथानक' कहा जाता है जिसमें घटनाओं के क्रम का विकास होता है । नाटककार अपनी कथावस्तु के चयन में कहानीकार या उपन्यासकार की भाँति अधिक सामग्री प्रयोग कर नहीं सकता। नाटककार को अभिनय में एक निश्चित समय की सीमा के भीतर ही कथानक का समावेश करना होता है इसलिए वह पूरी कथा की मुख्य-मुख्य घटनाओं को ही नाटक में इस ढंग से रखता है कि दर्शकों को कथा की प्रतीति हो जाती है ।

भारतीय आचार्यों ने नाटक में तीन प्रकार की कथाओं का निर्धारण किया है १ प्रख्यात २ उत्पाद्य ३ मिश्र प्रख्यात कथा।

प्रख्यात कथा इतिहास, पुराण से प्राप्त होती है। जब उत्पाद्य कथा कल्पना पराश्रित होती है, मिश्र कथा कहलाती है। इतिहास और कथा दोनों का योग रहता है। इन कथा आधारों के बाद नाटक कथा को मुख्य तथा गौण अथवा प्रासंगिक भेदों में बांटा जाता है, इनमें से प्रासंगिक के भी आगे पताका और प्रकरी है।

(क) आधिकारिक अथवा मुख्य कथा-जो नायक के चरित्र से सीधा सम्बन्ध रखती है।

(ख) प्रासंगिक अथवा गौण कथा-जो प्रसंगवश कथा में आ जाती है।

प्रासंगिक कथा भी दो प्रकार की होती है-

(अ) पताका - वह प्रासंगिक कथा है जो मुख्य कथा के साथ-साथ अन्त तक चलती है।

(ब) प्रकरी वह प्रासंगिक कथा है जो बीच में ही समाप्त हो जाती है। रामायण की कथा में राम की कथा के साथ-साथ अन्त तक चलने वाली भरत की कथा 'पताका' है जबकि 'शबरी' की कथा 'प्रकरी' है।

भारतीय आचार्यों के मतानुसार नाटकों की कथावस्तु पाँच प्रकार की होती है-

(i) प्रारम्भ (ii) प्रयत्न (iii) प्रत्याण (iv) नियताप्ति (v)

फलागम।

इसके अतिरिक्त नाटक में पांच संधियों का प्रयोग भी किया जाता है। वास्तव में नाटक को अपनी कथावस्तु की योजना में पात्रों और घटनाओं में इस रुप में संगति बैठानी होती है कि पात्र कार्य व्यापार को अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर सके। नाटककार को ऐसे प्रसंग कथा में नहीं रखनी चाहिए जो मंच के संयोग ना हो।

2) पात्र :

नाटक में नाटक का अपने विचारों, भावों आदि का प्रतिपादन पात्रों के माध्यम से ही करना होता है। अतः नाटक में पात्रों का विशेष स्थान होता है। नाटक में घटनाओं के आधार पर पात्र होते हैं। नाटक के

प्रमुख पात्र को 'नायक' कहते हैं। नायक ही नाटक में फल का अधिकारी होता है। नायक की पत्नी या प्रेमिका 'नायिका' कहलाती है। प्रमुख पात्र अथवा नायक कला का अधिकारी होता है तथा समाज को उचित दशा तक ले जाने वाला होता है। भारतीय आचार्यों के मतानुसार नायक विनीत, त्यागी, प्रियवादी, दक्ष, लोकप्रिय, आदर्शवादी, शास्त्रज्ञ, धर्मनिष्ठ, आत्म-सम्मानी, ओजस्वी आदि सभी गुणों से सम्पन्न होना चाहिये। किन्तु आधुनिक नाटकों में उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक नहीं माना जाता। आज नाटकों में किसान, मजदूर आदि कोई भी पात्र हो सकता है। पात्रों के संदर्भ में नाटककार को केवल उन्हीं पात्रों की सृष्टि करनी चाहिए जो घटनाओं को गतिशील बनाने में तथा नाटक के चरित्र पर प्रकाश डालने में सहायक होते हैं। पात्रों का सजीव और प्रभावशाली चरित्र ही नाटक की जान होता है। कथावस्तु के अनुरूप नायक धीरोदात्त, धीर ललित, धीर शांत या धीरोद्धत हो सकता है।

नाटक के अन्य सभी तत्व पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाते हैं। उनके आचार व्यवहार और वार्तालाप से नाटक की कथावस्तु निर्मित होती है। नाटक में नायिका के अतिरिक्त नाटक में मुख्य पात्र भी होते हैं जिनमें से कुछ नायक के सहयोगी पात्र होते हैं और कुछ प्रतिकूल अथवा विरोधी पात्र। प्रमुख विरोधी पात्र खलनायक या प्रतिनायक कहलाता है। पात्रों की संख्या के संबंध में नाटक में कोई निश्चित नियम नहीं होता। कथावस्तु की आवश्यकताओं के अनुरूप पक्षों की योजना की जाती है। इतना ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि उतने ही पात्र रखे जाएँ जितने कार्य व्यापार के विकास के लिए जरूरी हों। कोई भी पात्र फालतू प्रतीत नहीं होना चाहिए। इसी तरह पात्रों की संख्या इतनी अधिक न हो जाए कि नाटक के समग्र प्रभाव में विघ्न पड़े अथवा रंगमंच पर पात्रों की भीड़-भाड़ दिखाई दे। घटनाओं की जरूरत के हिसाब से ही पात्र होने चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि पात्रों के कार्य से कथानक विकसित हो और वे कथानक के अनिवार्य अंग हों।

3) उद्देश्य :

नाटक साहित्य की एक प्रमुख विधा है, जो अभिनय, संवाद और मंचन के माध्यम से किसी कथा या विचार को दर्शकों तक पहुंचाती है। नाटक का हर तत्व – पात्र, संवाद, भाव, दृश्य – किसी मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है। अतः नाटक का "उद्देश्य" उसके प्रमुख तत्वों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।

नाटक के उद्देश्य के सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोणों में पर्याप्त अन्तर है। हमारा देश आदर्शवादी रहा है, अतः यहाँ साहित्य रचना किसी न किसी आदर्श को ध्यान में रखकर हुई है। यहाँ के नाटकों में धर्म, अर्थ और काम जीवन के तीन प्रमुख उद्देश्यों में से किसी न किसी एक की प्रधानता अवश्य रहती है। नाटक के अन्य तत्व इस उद्देश्य के साधन मात्र होते हैं। भारतीय दृष्टिकोण सदा आशावादी रहा है इसलिए संस्कृत के प्रायः सभी नाटक सुखांत रहे हैं। पाश्चात्य नाटकों में व्यक्त या अव्यक्त रूप से कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है किन्तु वह किसी प्रकार की जीवन मीमांसा के रूप में होता है। आन्तरिक या बाह्य संघर्ष के द्वारा दर्शक या पाठक उस उद्देश्य को समझने में सफल होते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के साथ ही साथ संघर्ष का शमन हो जाता है। पाश्चात्य नाटककार अपने इस उद्देश्य की अभिव्यक्ति स्वयं न करके कथोपकथन के माध्यम से करता है। पश्चिम नाटककारों ने या साहित्यकारों ने साहित्य को जीवन की व्याख्या मानते हुए उसके प्रति यथार्थ दृष्टिकोण अपनाया है उसके प्रभाव से हमारे यहां भी कई नाटक दुखांत में लिखे गए हैं । नाटक का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि समाज और व्यक्ति के मनोबल को छूना, झकझोरना और प्रेरित करना भी है। यह उद्देश्य

ही नाटक को सार्थक, प्रभावशाली और अमर बनाता है। जिस नाटक में उद्देश्य स्पष्ट और सशक्त होता है, वही दर्शकों के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ता

4) देश काल तथा वातावरण :

देश-काल और वातावरण से पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता और वास्तविकता आती है। प्रत्येक युग, देश तथा वातावरण का चित्रण, उसकी संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेशभूषा के अनुकूल होनी चाहिए। किन्तु इस चित्रण में रंगमंच की सुविधाओं और सीमित स्थान का भी ध्यान रखना होता है। देशकाल वातावरण के चित्रण में नाटककार को युग अनुरूप के प्रति विशेष सतर्क रहना आवश्यक होता है। पश्चिमी नाटक में देशकाल के अंतर्गत संकलनत्रय समय स्थान और कार्य की एकता पर बल दिया है । वस्तुतः यह तीनों तत्व' यूनानी रंगमंच' के अनुकूल थे। जहां रात भर चलने वाले लंबे नाटक होते थे और दृश्य परिवर्तन की योजना नहीं होती थी। परंतु आज रंगमंच के विकास के कारण संकलन का महत्व समाप्त हो गया है। भारतीय नाट्यशास्त्र में इसका उल्लेख ना होते हुए भी नाटक में स्वाभाविकता, औचित्य तथा सजीवता की प्रतिष्ठा के लिए देशकाल वातावरण का उचित ध्यान रखा जाता है। इसके अंतर्गत पात्रों की वेशभूषा तत्कालिक धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों में युग का विशेष स्थान है। अतः नाटक के तत्वों में देशकाल वातावरण का अपना महत्व है।

5) संवाद अथवा कथोपकथन :

नाटक में नाटकार संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है। हमारे जीवन में वाणी का जो महत्व है वही नाटक में संवादों का है। अन्य साहित्यिक विधाओं में लेखक अपनी ओर से भी कुछ कहता है किंतु नाटक का लेखक सब कुछ पात्रों के माध्यम से ही कहलाता है। पात्रों का व्यवहार और वाणी ही लेखक के कथ्य को दर्शक तक पहुँचाती है। पात्रों के चरित्र के उद्घाटन में संवादों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी पात्र के वचनों से उसके अपने बारे में परिचय मिलता है। साथ ही जो कुछ वह अन्य पात्रों के बारे में कहता है उससे अन्य पात्रों के बारे में जानकारी मिलती है। अतः संवाद सरल, सुबोध, स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए। गंभीर दार्शनिक विषयों से इसकी अनुभूति में बाधा होती है। संवाद को नाटक की कसौटी माना जाता है क्योंकि कथ्य की संप्रेषणीयता में संवाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवाद इतने लंबे नहीं होने चाहिए कि भाषा के मौखिक रूप यानी बोलने की दृष्टि से अस्वाभाविक हो जाएँ और दर्शक ऊबने लगें। न ही इतने विचार बोझिल होने चाहिए कि अस्पष्ट हो जाएँ। उनमें बोलचाल की सहजता अपेक्षित है। रंगमंच पर नाटक की सफलता या असफलता का आधार काफी हद तक उसके संवाद होते हैं।

कथोपकथन का उपयोग अक्सर कहानी को आगे बढ़ाने, पात्रों के बारे में जानकारी देने, या कहानी में भावनामक तनाव पैदा करने के लिए किया जाता है। कथोपकथन यह नाटक का प्राण है। इसी से पात्रों के चरित्र का विकास होता है। नाटक में निरर्थक कथोपकथन की कोई गुंजाइश नहीं है। कथोपकथन स्वाभाविक, तर्कसंगत और यथासम्भव संक्षिप्त होने चाहिये। उसमे अभिनय की उपयुक्तता होनी चाहिये। कथोपकथन को आचार्यों ने तीन श्रेणियों में बाँटा है

अ) नियत श्राव्य - यह कथोपकथन कुछ निश्चित पात्रों के ही बीच होता है। रंगमंच पर उपस्थित सभी पात्रों का सम्बन्ध उससे नहीं होता।

आ) सर्व श्राव्य - यह सबके सुनने के लिए होता है।

इ) अश्राव्य - यह रंगमंच पर उपस्थित किसी पात्र के सुनने के लिए न होकर केवल दर्शकों के सुनने के लिए होता है। इसे स्वगत कथन या स्वगत भाषण भी कहा जाता है। यद्यपि स्वगत कथन को आजकल अनुचित माना जाता है किन्तु इसकी उपयोगिता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

6) अभिनय :

यह नाटक का प्रमुख तत्व है जो कथानक, पात्रों और संवादों को जीवंत रूप प्रदान करता है। अभिनय के बिना नाटक की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा दर्शकों तक नाटक का संदेश और भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचती हैं। अभिनेता नाटक के पात्रों की मनोदशा, व्यक्तित्व और भावनाओं को अपने हाव-भाव, संवाद अदायगी और शारीरिक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करता है। एक अच्छा अभिनेता पात्र की भावनाओं को इतने विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करता है कि दर्शक उसमें खो जाते हैं। अभिनय में संवादों का उच्चारण, लय और तीव्रता महत्वपूर्ण होती है। कई बार मौन अभिनय भी गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। नृत्य, मुद्राएँ, लड़ाई के दृश्य या यहाँ तक कि चेहरे के सूक्ष्म भाव भी कहानी को आगे बढ़ाते हैं। अभिनय का उद्देश्य दर्शकों को नाटक की दुनिया में खींचना और उन्हें भावनात्मक या बौद्धिक स्तर पर प्रभावित करना होता है। अभिनय नाटक की आत्मा है, जो लिखित शब्दों को सजीव अनुभव में बदल देता है। यह न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि समाज को प्रतिबिंबित करने और उसे चुनौती देने का एक शक्तिशाली उपकरण भी है।

अभिनय नाट्यतत्व का वह गुण है जो दर्शक को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस संबंध में नाटककार को नाटकों के रूप, आकार, दृश्यों की सजावट और उसके उचित संतुलन, परिधान, व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था आदि का पूरा ध्यान रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में लेखक की दृष्टि रंगशाला के विधि -विधानों की ओर विशेष रुप से होनी चाहिए इसी में नाटक की सफलता निहित है । इसकी श्रेष्ठता पात्रों के वाक्चातुर्य और अभिनय कला पर निर्भर है। मुख्य प्रकार से अभिनय ४ प्रकार का होता है।

१ - आंगिक अभिनय : शरीर से किया जाने वाला अभिनय,

२ - वाचिक अभिनय : संवाद का अभिनय

३ - आहार्य अभिनय : वेशभूषा, मेकअप, स्टेज विन्यास,

४ - सात्विक अभिनय : अंतरात्मा से किया गया अभिनय

7) भाषा - शैली :

नाटक की भाषा सरल, स्पष्ट , स्वाभाविक और सुबोध और अभिनेत्यता के गुणों से संपन्न होनी चाहिए, जिससे नाटक में प्रभाविकता का समावेश हो सके तथा दर्शक को क्लिष्ट भाषा के कारण बौद्धिक श्रम ना करना पड़े अन्यथा रस की अनुभूति में बाधा पहुंचेगी। अतः नाटक की भाषा सरल व स्पष्ट रूप में प्रवाहित होनी चाहिए।भाषा की दुरूहता पाठकों अथवा दर्शकों के लिए आनन्द में बाधक हो जाती है। भाषा यह पात्रानुकूल तथा परिवेश के उपयुक्त हो। यानी पात्रों के गुण, स्वभाव, शिक्षा-दीक्षा, सामाजिक हैसियत, मानसिक दशा के अनुकूल हो तथा जिस समय और समाज के वे पात्र हों उस समय और समाज के अनुरूप हो। दृश्य विधा के कारण नाटक में हमारा भाषा से जीवित साक्षात्कार होता है। भाषा के लिखित रूप के बजाए यहाँ उसके मौखिक रूप की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लिखित भाषा और मौखिक भाषा के स्वरूप और प्रभाव में अंतर होता है। किंतु नाटक में दोनों का समन्वय अपेक्षित होता है। जो बात पात्र कहे वह दर्शक को तुरंत संप्रेषणीय हो, इसलिए उसमें स्पष्टता नितांत अपेक्षित है। इसके साथ ही उसमें सार्थक सारगर्भिता भी हो जो दर्शकों को प्रभावित कर सके। यानी किसी भी गंभीर या महत्वपूर्ण बात को पूरी सहजता और स्पष्टता से इस प्रकार कहा जाए कि उसकी बोलचाल की लय समाप्त न हो।

किसी भी कृति में कथ्य को प्रस्तुत करने का ढंग शैली कहलाता है। कोई भी बात अपने आप में जितनी महत्वपूर्ण होती है उतना ही उसे प्रस्तुत करने का ढंग भी महत्वपूर्ण होता है। शैली में दो चीजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैः लेखक का अपना व्यक्तित्व और उसके द्वारा चुना गया विषय। विषय के अनुरूप शैली गंभीर विवेचन युक्त, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक या व्यंग्यात्मक होती है। शैली के कई भेद होते हैं। उदाहरण के लिए प्रतीकात्मक शैली, हास्यपरक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, विचारपरक शैली, मनोविश्लेषणपरक शैली, भावनात्मक शैली, प्रसन्न शैली, पांडित्यपूर्ण शैली, तर्कपूर्ण शैली, खंडन-मंडन की शैली, बोलचाल की शैली । एक ही कृति में स्थान-स्थान पर अलग-अलग शैलियाँ भी प्रयुक्त हो सकती हैं।

8) रस :

नाटक एक समग्र साहित्यिक विधा है जिसमें संवाद, अभिनय, भाव, मंचन आदि का समावेश होता है। इसका उद्देश्य दर्शकों को मनोरंजन प्रदान करना, साथ ही उनके हृदय में किसी भावना या अनुभूति को जाग्रत करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति 'रस' के माध्यम से होती है।

"रस आत्मा नाटस्य"
अर्थात् "रस ही नाटक की आत्मा है।"

रस वह भावात्मक स्थिति है जो दर्शकों के हृदय में उत्पन्न होकर उन्हें सौंदर्यबोध एवं आनन्द की अनुभूति कराता है। नाटक का मूल उद्देश्य दर्शकों के हृदय में किसी रस की अनुभूति कराना होता है। अभिनय, संवाद, गीत, नृत्य आदि सभी रस के संप्रेषण में सहायक होते हैं। रस के माध्यम से ही दर्शक अपने अनुभव को पात्र के अनुभव से जोड़ पाता है। रसानुभूति दर्शकों को मानसिक शुद्धि (कैथार्सिस) प्रदान करती है। नाटक में रस तत्व केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्य के भावात्मक जीवन की गहराई को उजागर करने का माध्यम है। रस के बिना नाटक निर्जीव और प्रभावहीन हो जाता है। इसीलिए, रस को नाटक की आत्मा कहा गया है।

नाटक के प्रकार

नाटक कई तरह के होते हैं। कुछ नाटकों को आप किसी थिएटर अथवा रंगमंच पर प्रस्तुत होते देखते हैं। साथ ही कुछ नाटक आपने ऐसे भी देखे होंगे जिनके अभिनय के लिए किसी थिएटर या रंगशाला की जरूरत नहीं है। आपने रामलीला या रासलीला देखी होगी, नौटंकी, विदेसिया या तमाशा आदि देखे होंगे या नुक्कड़ नाटक देखे होंगे। इनकी प्रस्तुति किसी भी खुली जगह में हो जाती है। जरूरत हो तो मंच बना लिया जाता है नहीं तो लोग दायरा बना कर खड़े हो जाते हैं या बैठ जाते हैं और अभिनेता बीच में खड़े होकर अभिनय करते हैं। इसके अलावा आपने टेलीविजन पर नाटक देखे होंगे या रेडियो पर नाटक सुने होंगे। इस तरह के नाटकों के कई भेद होते हैं जैसे साहित्यिक नाटक और लोक नाटक। वस्तुतः इनके भेदों का निर्धारण कई आधारों पर किया जा सकता है।

1)स्वरूप के आधार पर नाटक के प्रकार :

I)सुखांत नाटक - सुखांत नाटक वह नाट्य रूप है, जिसमें कथा का अंत सुखद होता है, अर्थात नायक को संघर्षों के बाद सफलता, प्रेम, शांति या न्याय प्राप्त होता है और दर्शकों के मन में संतोष और प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है। इस नाटक में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है। यह दर्शकों में विश्वास और प्रेरणा जगाता है। सुखांत नाटकों में सामाजिक सुधार, प्रेम, एकता, नैतिकता आदि पर बल होता है। यह नाटक समाज को एक सकारात्मक दिशा दिखाते है । सुखांत नाटक केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि सामाजिक और मानवीय मूल्यों को भी मजबूत करता है।

II) दुखांत नाटक - दुखांत नाटक एक नाट्य शैली है जिसमें नायक या मुख्य पात्र का दुःखद अंत होता है। यह नाटक मानवीय पीड़ा, नियति के संघर्ष और नैतिक विफलता को गहराई से चित्रित करता है। नायक की पराजय, पतन या मृत्यु होती है। नायक प्रतिष्ठित होता है, परंतु उसकी कोई त्रुटि उसके पतन का कारण बनती है। दर्शकों में दया और भय की भावना जगाकर उनका शुद्धिकरण होता है। दुखांत नाटक मानव जीवन की कठोर वास्तविकताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है और दर्शकों को गहन चिंतन के लिए प्रेरित करता है।

III) दुःख-सुखांत नाटक : दुख-सुखांत नाटक वह नाटक होता है जिसमें कथा का आरंभ या मध्य भाग दुःखद घटनाओं, संघर्षों या विघ्नों से भरा होता है, लेकिन अंततः कथा का समापन सुखद रूप में होता है। ऐसे नाटकों में जीवन की यथार्थता और संघर्षों से उबरने की प्रेरणा दिखाई देती है।ऐसे नाटक हृदय को स्पर्श करते हैं। करुणा, आशा, और विजय की भावनाएँ एक साथ प्रकट होती हैं। अच्छाई की जीत और बुराई की हार होती है। दुख-सुखांत नाटक न केवल दर्शकों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करता है, बल्कि जीवन के संघर्षों के बीच आशा और विश्वास की भावना भी जगाता है। यह नाट्य-प्रकार यथार्थ और आदर्श का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है।

IV) प्रहसनपरक नाटक : प्रहसन परक नाटक वह नाटक होता है जिसमें हास्य, विनोद, व्यंग्य, और विचित्र परिस्थितियों के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन किया जाता है। इन नाटकों में पात्रों की गतिविधियाँ, भाषा या परिस्थितियाँ हास्यास्पद और अत्युक्तिपूर्ण होती हैं। समाज की कुरीतियाँ, पाखंड, भ्रष्टाचार, मूर्खता आदि पर हँसी के माध्यम से चोट।
संवाद छोटे, व्यंग्यात्मक व चुटीले होते हैं। दर्शकों को हँसाते हुए सामाजिक, राजनीतिक या नैतिक सच्चाइयों को उजागर किया जाता है । प्रहसन परक नाटक एक सशक्त नाट्य रूप है जो हल्के-फुल्के ढंग से गंभीर विषयों को प्रस्तुत करता है। यह न केवल दर्शकों को हँसाता है, बल्कि उन्हें सोचने पर भी मजबूर करता है।

2)विषय के आधार पर नाटक के प्रकार :

I) ऐतिहासिक नाटक :

ऐतिहासिक नाटक वह नाट्य शैली है जिसमें इतिहास की घटनाओं, व्यक्तित्वों और युगीन परिस्थितियों को नाटकीय रूप से प्रस्तुत किया जाता है। यह नाटक इतिहास और कल्पना के सम्मिश्रण से बनता है, जिसमें तथ्यात्मक सत्य के साथ-साथ नाटकीय प्रभाव को भी महत्व दिया जाता है। ऐतिहासिक नाटकों में शासकों, युद्धों, सामाजिक परिवर्तनों और सांस्कृतिक संघर्षों को दर्शाया जाता है। ऐतिहासिक नाटक दर्शकों को अतीत की घटनाओं से जोड़कर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना जगाता है। ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से नैतिक और सामाजिक सबक देता है।

II) पौराणिक नाटक :

पौराणिक नाटक वे नाटक होते हैं जिनका कथानक भारतीय पुराणों, धर्मग्रंथों, महाभारत, रामायण आदि प्राचीन ग्रंथों से लिया गया होता है। इनमें देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों, महान राजाओं और पौराणिक पात्रों की जीवन गाथाएँ, नैतिक शिक्षाएँ और धार्मिक संदेश नाटकीय रूप में प्रस्तुत किए जाते है। कथा रामायण, महाभारत, भागवत, शिव पुराण आदि से ली जाती है। सत्य, धर्म, कर्म, भक्ति, त्याग जैसे मूल्यों का प्रचार होता है। धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा को जीवित रखते हैं।नैतिक मूल्यों और आदर्श जीवन की प्रेरणा देते हैं। जनमानस में भक्ति और संस्कारों की भावना का विकास करते हैं। पौराणिक नाटक आध्यात्मिकता, नैतिकता और सांस्कृतिक गौरव को मंच पर सजीव करती है। यह केवल एक नाटकीय प्रस्तुति नहीं, बल्कि एक धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव होता है।

III)सामाजिक नाटक :

सामाजिक नाटक वह नाट्य शैली है जिसमें समकालीन सामाजिक समस्याओं, मानवीय संबंधों, वर्ग संघर्ष और नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर कथा प्रस्तुत की जाती है। इसका उद्देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों, विसंगतियों और अन्याय के प्रति जागरूकता फैलाना होता है। नाटक में जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि मुद्दों पर प्रकाश डाला जाता है। नाटक का केंद्र सामान्य

मनुष्य होता है, जो सामाजिक परिस्थितियों से जूझता है। सामाजिक नाटक न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह समाज का दर्पण भी है जो हमें हमारी कमियों और संभावनाओं से रूबरू कराता है।

IV) राजनीतिक नाटक : राजनीतिक नाटक वह नाट्य शैली है जो सत्ता, शासन व्यवस्था, राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक-राजनीतिक विचारधाराओं को केंद्र में रखती है। यह नाटक सत्ता के दुरुपयोग, जनता के संघर्ष और राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करता है। पूँजीवाद, लोकतंत्र आदि विचारधाराओं का टकराव । राजनीतिक व्यवस्था को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाना। कटाक्ष या गंभीर विश्लेषण के माध्यम से राजनीतिक स्थितियों को उजागर करना यह राजनीतिक नाटकों की विशेषता होती है।

V) धार्मिक नाटक : धार्मिक नाटक वह नाट्य शैली है जिसमें धार्मिक कथाओं, आस्थाओं, मिथकों और आध्यात्मिक विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य धार्मिक शिक्षा देना, आस्था को मजबूत करना या धर्म के सामाजिक प्रभाव को दर्शाना होता है। धर्म, नैतिकता और ईश्वर-भक्ति जैसे विषयों पर बल दिया जाता है । नाटक में धार्मिक संकेतों और प्रतीकों का उपयोग होता है । धार्मिक नाटकों में श्रद्धा, करुणा और शांत रस की प्रधानता होती है। यह नाटक धार्मिक आस्था और नैतिक मूल्यों को सुदृढ करता है।

3) शैली के आधार पर नाटक के प्रकार : हास्यपरक नाटक, व्यंग्यपरक नाटक, प्रतीकात्मक नाटक, मनोविश्लेषणपरक नाटक

4) अंकों के आधार पर नाटक के प्रकार : एकांकी नाटक, अनेकांकी नाटक।

5) पात्रों के आधार पर नाटक के प्रकार : एक पात्रीय नाटक, बहु पात्रीय नाटक

6) गद्य-पद्य के आधार पर नाटक के प्रकार : गद्य नाटक, पद्य नाटक, गीति नाटक (संगीत नाटक)

7) प्रयोगों के आधार पर नाटक के प्रकार : समस्या नाटक, नुक्कड़ नाटक, एब्सर्ड नाटक, नृत्य नाटक

8) प्रस्तुति माध्यम के आधार पर नाटक के प्रकार : रंगमंचीय नाटक, रेडियो नाटक, टेलीविजन नाटक

नाटकों के ये प्रकार उनकी विशिष्टताओं को स्पष्ट करने के लिए निर्धारित किए गए हैं। अतः यह नहीं समझना चाहिए कि कोई नाटक उपर्युक्त में से किसी एक ही प्रकार का हो सकता है। किसी भी नाटक में विभिन्न दृष्टियों से कई तरह की विशिष्टताएँ होती हैं, जैसे कोई नाटक राजनीतिक होने के साथ-साथ प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक भी हो सकता है। उसे समस्या नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है और नुक्कड़ के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है ।

नाटक और रंगमंच

→ नाटक यह हिंदी साहित्य की विधा है। नाटक और रंगमंच यह एक-दूसरे के अभिन्न अंग है। नाटक के बगैर रंगमंच अधूरा है और रंगमंच के बिना नाटक अधूरा है। नाटक लिखने से तैयारी करने तक और रंगमंच पर प्रस्तुती करने तक बहुत सारी तैयारी करनी पड़ती है।

(1) **कथावस्तु :** — नाटक रंगमंच पर अगर प्रस्तुत करना है तो उसकी कथा होनी चाहिए। कथा प्रस्तुत करते समय पात्र का सहारा लेकर कथा प्रस्तुत की जाती है। नाटक के माध्यम से मुख्य कथा प्रस्तुत होनी चाहिए। नाटक की कथावस्तु दो भाग की घटना और कार्य कि जो गति देती है कथा का विषय किसी भी तत्व का हो सकता है।

(2) **पात्र :** — नाटक की कथावस्तु पात्र के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। कथा के अनुकूल पात्र का चयन होना चाहिए। पात्र अगर कम होंगे तो कथावस्तु अच्छी तरह प्रस्तुत हो जाती है। नाटक में मुख्य पात्र के साथ गौण पात्र भी उसमें होते है। 'पताका' जो दीर्घ-दीर्घ में आता है पूरी जो है एक बार आता है बाद में नाटक में कभी नहीं आता।

(3) **संवाद :** — नाटक में संवाद होता है संवादों के माध्यम से नाटक की कथावस्तु प्रस्तुत की जाती है। अगर संवाद छोटे-छोटे होंगे तो दर्शक वर्ग को नाटक समझ में आता है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(4) **અભિનય :** — નાટક માં અભિનય પણ હોવા ચાહિએ। અભિનય પાત્રાનુકૂલ જ અનુકૂલ હોવા ચાહિએ। અભિનય દેખને ઔર સુનને યોગ્ય નાટક વાસ્તવિક લગના ચાહિએ ઐસા વાસ્તવિક ઔર અસાધારણ સે અભિનય નાટક માં પ્રસ્તુત હોના ચાહિએ।

(5) **વેશભૂષા ઔર જગહભૂષા :** — નાટક પ્રસ્તુત કરના હૈ તો વેશભૂષા ઔર જગહભૂષા પાત્રો કી ઔર ઘટના કે અનુકૂલ ઉસમેં હોના ચાહિએ। યથા - કિસાન કા ચિત્રણ દિખાના હૈ તો કિસાન ઐસા પ્રસ્તુત હોના ચાહિએ જો અસાધારણ લગના ચાહિએ। ઇસકી વેશભૂષા ઔર જગહભૂષા વૈસી હી હોની ચાહિએ।

(6) **અનિવાર્યતા :** — નાટકકાર, મંચન કરનેવાલે નિર્દેશક, વ્યવસ્થા, પાત્ર આદિ સબ ઉસમેં હોના ચાહિએ। તબ હી નાટક રંગમંચ સાર્થક હો પાતા હૈ।

(7) **સેટ વ્યવસ્થા :** — નાટક રંગમંચ પર પ્રસ્તુત કરના હૈ તો સેટ ભી ભારી હોના ચાહિએ। સેટ ભારી હોગા તો કથાવસ્તુ નાટક અચ્છી તરહ સે પ્રદર્શિત હો પાતા હૈ। જિતના સુવિધા સે ભારી સેટ હોગા દર્શક ભી ઉતના જ્યાદા આકૃષ્ટ ઔર અંતિમ સમય તક બંધા।

(8) **પ્રકાશ વ્યવસ્થા :** — સેટ પર

Page No. : VEDHA
Date : / /

घटना चुन रही है उसी के अनुरूप वेशभूषा प्रकाश की व्यवस्था उसमें होनी चाहिए।

उदा— चोरी चोरी जाना है तो रात उसके हाथ में टॉर्च होना चाहिए।

आदि घटना के अनुरूप प्रकाश की व्यवस्था उसमें होनी चाहिए।

9) ध्वनि :—

नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत करना है तो आवाज की व्यवस्था उसमें करनी चाहिए। अंतिम छोर दर्शक तक नाटक के पात्र की आवाज जानी चाहिए। हाथ में जैसी जरूरत माईक ली होना चाहिए। पात्र भी घटना प्रस्तुत करते समय आवाज भी घटना के अनुरूप होनी चाहिए।

10) ~~उद्देश्य~~ उद्देश्य :—

उद्देश्य से होना नहीं है। कोई भी कार्य बिना उद्देश्य से होना नहीं है। नाटककार नाटक लिखते समय समाज समाज का चित्रण साहित्य में करता है। उसके माध्यम से अपने भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है समाज में जागृति की दृष्टि से भी नाटक लिखा जाता है और उसका मंचन होता है।

निष्कर्ष : कहा जा सकता है कि नाटक और रंगमंच ये एक दूसरे के पूरक है। नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत होता है तो यह दृक-श्राव्य माध्यम बन जाता है।

LATUR 413531

Q1 'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक की कथावस्तु

→ शंकर शेष लिखित 'एक और द्रोणाचार्य' की कथावस्तु दो समानांतर कहानियों पर आधारित है। एक महाभारतकालीन द्रोणाचार्य की और दूसरी आज के शिक्षक प्रोफेसर अरविंद की। नाटक पौराणिक कथाओं के माध्यम से वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय और शिक्षक के असहाय होने की विडंबना को उजागर करता है। प्रोफेसर अरविंद अपने आदर्शों और सिद्धांतों से समझौता करने के दबाव में आकर व्यवस्था की कठपुतली बन जाता है। ठीक वैसे ही जैसे द्रोणाचार्य ने समझौता किया। 'एक और द्रोणाचार्य' की कथावस्तु निम्नलिखित है।

(1) दो भागों में कथा :—

'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक की कथा दो भागों में है। एक महाभारतकालीन द्रोणाचार्य की है यानी यह कथा एक तरफ पौराणिक है तो दूसरी तरफ यह कथा आधुनिक भी है। आधुनिक कथा में प्रोफेसर अरविंद के आदर्शों और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

(2) प्रो. अरविंद का परिवार :—

प्रोफेसर एक कॉलेज में प्रोफेसर है। उसकी पत्नी का नाम सविता है। उनका एक बेटा है जो प्रो. अरविंद के उसका मेडिकल कोर्स में पढ़ाता है। इसका एक विधवा बहन है उसका महीना पन्द्रह भेजवाना पड़ता है। माँ कन्सर से ग्रस्त है उसका अस्पताल में ट्रीटमेन्ट चल रहा है।

(3) राजकुमार नकल करना :—

प्रेसीडेन्ट का कथ्य। उनके ही कॉलेज में पढ़ाई करता है। एक बार विद्यापीठ की परीक्षा चल रही है उस परीक्षा में नकल करता है। मगर वह नकल हाथ से गिर जाता है। वह हवा से उड़ती है। नकल किया हुआ राजकुमार उसमें फसता नहीं है नकल से बच जाता है।

(4) चंदु को रस्टीकेट :—

राजकुमार ने नकल की है मगर हाथ से नकल गीर जाती है। उसका चंदु उड़ लेता है उसी वजह वह पर प्रासाद आ जाते है। उसका प्रिंसापल कमरे में ~~[illegible]~~ चूक जाते है वहां पर प्रसीडेन्ट होता है। चंदु को कुछ ~~[illegible]~~ सूझ रहा कुछ भी पुछा नहीं जाता है। उसको कमलेश विद्यापीठ में भेजवाई जाती है।

(5) चंदु का प्रयास :—

चंदु को नकल करने के कारण। उसकी कम्पलेन विद्यापीठ में भिजवायी जाती है। यह सब प्रोफेसर अरविंद को बताने के लिए। चंदु उनके पास आता है। वह सर से बताता है की यह मैंने नकल नहीं की है। सच-सच से बताता है।

(6) सिमा का हस्तक्षेप :—

राजकुमार ने नकल की है मगर इसमें चंदु फस जाता है। राजकुमार को बचाने के लिए प्रेसीडेन्ट अरविंद प्रिंसीपल को ऑफर दिया जाता है। अरविंद भी

પકડી મોટા દોસ્તો કે આગ્રહ કે કારણ પ્રસિદ્ધિ
ના આગ્રહ સ્વીકાર કરતા હૈ। ચંદુ ના વહ
કિસી કી તરહ કી મદદ નહીં કરતા।

(7) અનુરાધા કી હત્યા :—

અનુરાધા સબ કી કોલેજ કી પસંદ
હૈ। એક બાર વહ કોલેજ કે પાસ કિસી પસંદ
કા ઇંતજાર કર રહી થી। ઉસી વક્ત વહાં પર
રાજકુમાર આતા હૈ ઉસકા સ્વાગત કરતા હૈ
વહીં પર પુંસોપત્ય અરવિંદ કોલેજ કે પાસ આ
રહે હોતે હૈ। વૃંદા પર રાજકુમાર કા વહાં રુ
નિશાન દાગા હૈ

(8) અરવિંદ કા ~~ઘબરાના~~ ઘબરાના :—

અનુરાધા કી હત્યા રાજકુ
ને કી હૈ। યહ સિર્ફ મૈંને અપને આંખો સે
દેખા હૈ। અગર અનુરાધા કાંડ મેં જાએગા તો
મેરે મેં સિર્ફ એકમાત્ર ગવાહ હું ઇસ કારણ
પ્રા. અરવિંદ વાર-વાર ઘબરાતા હૈ। ઘર
આને પ્રસાદને કા ખાના બનાતા હૈ

(9) નૈતિક મૂલ્ય કા પતન :—

ચંદુ કા રસ્ટીકેટ કરના, અનુરાધ
કી હત્યા કરના, વિમલેંદુ કી હત્યા કરના
આદિ સબ ઘટનાઓં દેખકર લગતા હૈ।
ન્યાય કિસી કો નહીં મિલ રહા હૈ સબ
કા દેખકર લગતા હૈ નૈતિક મૂલ્ય કા પ
હો રહા હૈ

(10) અનુરાધા આત્મહત્યા કરના :—

Date

અનુરાધા ની છોડછાડ રાજકુમાર કરતા હતા
તેમનો ન્યાય કોઈ પણ દેતુ નથી હતુ માતા-પિતા પણ
તેમનો સહકાર નહિ કરતા હતા અરવિંદ પણ સહકાર
કરનેવાલા થા મગર તેમની નયી મુસીબત આતી હતી
પણ અનો સહકાર કરતા નહિ અંત મેં ~~કર~~
અનુરાધા આત્મહત્યા કર લેતી હૈ

(11) પ્રેસીડેન્ટ ની મૃત્યુ :—

પ્રેસીડેન્ટ નો હાથ ~~કટ~~ ~~કટ~~ અડ પ્રેશર
હોતા હૈ ડૉ. તેમનો દુશ્મન દવા ~~કે~~ મેં ઝુમન નો
સલાહ દેતુ હૈ પ્રો. અરવિંદ રોજ તેમનો દુશ્મન
ટેબલ પર મેલ જાતા હૈ ઉપર સે મુખ્ય દેખાય
સમય પ્રેસીડેન્ટ ના પર પ્રેસન જાતા હૈ વહ પર પ્રેસીડેન્ટ
નો મૃત્યુ હો જાતી હૈ

(12) ~~જોઈ~~ મેટર :— પ્રેસીડેન્ટ નો મૃત્યુ હો જાને પર
જોઈ મૉટર શુરુ હો જાતા હૈ ચંદુ નો ગવાહ
બી જાતી હૈ ચંદુ ના વકીલ વેદુત સાર
પ્રશ્ન પુછ્ત હૈ અંત મેં તેમનો પુછા જાતા
હૈ મરતુ વખતુ અરવિંદ ના હાથ કહાં પર થા
તો પ્રેસીડેન્ટ કે ગલે પર અંતમેં વકીલ
ને જાય ઉદ્દેશ્ય હૈ તેમનો દોસ્તુ દિખા ક્યા ? ચંદુ
કહતા હૈ હાં હો સકતા હૈ

(13) સંદિગ્ધ ઉત્તર :—

ચંદુ ને જોર દેં તેમનો
દિયા જો હો સકતા હૈ પ્રો. અરવિંદ ને પ્રેસીડેન્ટ
નો ધક્કા દિયા હો યહ સંદિગ્ધ ઉત્તર હૈ
દુસરી જગહ દ્રોણાચાર્ય વહા મધ્યાહ્ન
મર જાતા હૈ યહ ખબર દ્રોણાચાર્ય નો પતા ચલતા હૈ
કોઈ કહતા હૈ અશ્વત્થામા મારા ગયા થા અશ્વત્થામા
ઘોડા મર ગયા પતા નહિં યહ તેમનો ~~કુ~~ કિસ્સા હૈ

GURUKUL Page No. Date

ANAND COLLEGE OF LATUR 413531

मिलता है। यह एक भी कारण संदिग्ध है

(14) द्रोणाचार्य की तुलना :—

द्रोणाचार्य की तुलना अरविंद के साथ की है दोनों भी शिक्षक है मगर अपने स्वार्थ दोनों भी दक्ष बनते स्वार्थ के भाग किसी का भी मदत नहीं करते।

(15) अस्तित्व की समस्या :—

इस नाटक में हर एक पात्र अपने अस्तित्व के लिए प्रयासरत है। शिखंडी, चंदु, अनुराधा, पल्लवी पुंसीपत्र, पत्नी, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, अर्जुन, प्रेसीडेन्ट आदि सब पात्र अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए प्रयत्न करते है

निष्कर्ष: अंत में जो समता है कि 'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक में महाभारत का द्रोणाचार्य जो है आधुनिक युग में अरविंद के रूप में आया है इस नाटक में शिक्षा का व्यवसायीकरण किया गया है

Q. 'एक और द्रोणाचार्य' चरित्र-चित्रण एवं पात्र

'एक और द्रोणाचार्य' शंकर शेष जी द्वारा रचित नाटक है। इस नाटक में दो कथाएँ चलती है। (1) आधुनिक कथा (2) पौराणिक कथा। दोनों कथाओं के पात्र अलग-अलग है। आधुनिक कथा के पात्र में (1) अरविंद (2) यदु (3) विमलेंदु (4) चंदु (5) प्राचार्य (6) राजकुमार (7) प्रेसीडन्ट (8) लीला (9) अनुराधा। तो पौराणिक पात्र में (1) द्रोणाचार्य (2) अर्जुन (3) अश्वत्थामा (4) कृपा आदि पौराणिक पात्र है। इन सभी पात्रों का विवेचन निम्नलिखित है —

A

(1) आधुनिक पात्र :—

प्रोफेसर अरविंद :—

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में प्रोफेसर अरविंद अर्थशास्त्र का एक युवा और आदर्शवादी प्राध्यापक है। जो शिक्षा व्यवस्था के भ्रष्टाचार से जूझते है। वह न्यायप्रिय, संवेदनशील और अपने पिता की गलतियों पर सवाल उठानेवाले व्यक्ति है, जिनके कार्यों से आधुनिक शिक्षा तंत्र में व्याप्त अन्याय और अनैतिकता को उजागर किया गया है, जो पौराणिक द्रोणाचार्य की कथा के साथ समानांतर रूप से चलती है।

अरविंद एक योग्य और ईमानदार गरीब छात्र की बजाय एक अमीर और सिफारिशी छात्र को दाखिला मिलने का विरोध करता है, क्योंकि यह युद्ध-धर्म के विपरीत है। वह अपने पिता के गलत कार्यों पर चुप नहीं रहते और अपनी असहमति को खुलकर व्यक्त करते है। अरविंद का चरित्र आधुनिक शिक्षा तंत्र के भ्रष्ट और अन्यायपूर्ण पहलुओं का प्रतीक है।

अरविंद का प्रिय चंदु है। परीक्षा में नकल करते समय ~~चंदु~~ चंदु का पकड़ा जाता है मगर नकल चंदु ने नहीं की थी। उसे फसाया जाता है। चंदु घर आकर सब बता देता है। अरविंद की इच्छा है की चंदु को

को सहयोग करना चाहिए। प्रेसीडेन्ट अपने बेटे को बचाने के लिए अरविंद को प्रिंसीपल को ऑफर दिया जाता है, पन्ना, दारुन सुझाव उसको बताता है कि प्रिंसीपल स्वीकार करना चाहिए। अरविंद प्रिंसीपल के पद स्वीकार करता है। चाहत हुए भी चंदु को मदद नहीं कर सकता है अनुराधा का भी कारण को पड़की है उसपर प्रेसीडेन्ट को बेटा राजकुमार हड़ताल करता है। अरविंद ही इस घटना को गवाह है अरविंद अनुराधा की मदद करना ही चाहता था मगर प्रेसीडेन्ट को आर 15 हजार रुपय का रिश्वत का आरोप अरविंद पर लगा दिया जाता है अपने को बचाने के लिए अनुराधा को भी मदद करना छोड़ देता है।

(2) **लीला :** — लीला अरविंद की पत्नी है उनको एक बेटा है। पति अरविंद को बार-बार कहती है कि शादी होके 10 साल हो गया आपने कुछ भी नहीं किया। 'एक और द्रोणाचार्य' में लीला एक ऐसी पात्र है एक महत्वाकांक्षी पत्नी के चरित्र को दर्शाती है, जो अपने पति के सिद्धांतवादी स्वभाव और शिक्षा की दयनीय स्थिति के बीच संघर्ष को व्यक्त करती है।

(3) **प्रेसिडेन्ट :** — प्रेसिडेन्ट का पात्र एक व्यापारी-नेता है जो शिक्षा-व्यवस्था को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता है और प्राचार्य की जगह ~~प्रोफेसर~~ प्रोफेसर अरविंद को बिठाने के लिए चंदु के पिता को धन देता है, जो शिक्षा को एक व्यापार के रूप में देखता है। यह पात्र आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनैतिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रेसिडेंट प्रोफेसर अरविंद को कॉलेज के प्रिंसीपल बनाने के एवज में कॉलेज से राजकुमार को निलंबित करने की प्रक्रिया बंद करने की बात करता है।

नाटक में वह कॉलेज को एक व्यापार की तरह चलाता है जहां पैसे और सत्ता के दम पर निर्णय लिए जाते है। नाटक के अंत में प्रेसिडेन्ट साहब को B.P. हो जाता है डाक्टर उनको खुली हवा में घुमने की सलाह देते है। प्रोफेसर अरविंद उनको खुली हवा में घुमने को ले जाते है। एक दिन ऊपर से मटका दिखते ही ऊपर से उनको लोग कुछ फेंकते जैसा दिखाई देता है वहीं से देखते समय प्रेसीडेन्ट को पैरेलिसिस जाता है और प्रेसीडेन्ट की मृत्यु हो जाती है।

(4) **विमलेंदु :** — विमलेंदु एक पात्र जो कि प्रेतात्मा की भूमिका निभाता है. ~~और इसकी आवाज~~ विमलेंदु नाटक में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से संबंधित एक पात्र है। यह एक प्रेतात्मा है जिसकी आवाज नाटक में घनश्याम सुंदरे द्वारा दी गई है। नाटक में प्रोफेसर अरविंद के साथी रहे, प्रिंसिपल के साथ-साथ विमलेंदु भी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को दर्शाता है।

विमलेंदु कॉलेज में प्रोफेसर था राजकुमार की नजरों पलटने से उसने खुद उसकी मार दी है। विमलेंदु की पत्नी है पति के मर जाने के बाद वह विधवा होने के इधर-उधर नौकरी ढूंढने भटकती है मगर उसको कोई नौकरी नहीं देता। उसके २ साल की बेटी भी है वह अपने पिता की याद करके रोती है। विमलेंदु की प्रेतात्मा सब देखके वह बहुत नाराज होता है।

अपने प्रिय दोस्त अरविंद को कहता है मैंने जो गल्ती की है वह गल्ती तुम मत करो मेरी गल्ती का मुझे एहसास हो चुका है।

(5) **प्रिंसीपल :** — प्रिंसीपल भी इस नाटक का एक पात्र है। जो एक शिक्षक ~~था~~ अरविंद के कालेज के अध्यक्ष पद पर आके जरता है और सभा व्यवस्था के दबाव के कारण अपने आदर्शों का समझौता करता है जैसा कि प्रोफेसर अरविंद और नाटक के अन्य

पात्रों के बीच संवाद में दर्शाया गया है। कॉलेज के नाटक में प्रिंसीपल अरविंद को अध्यक्ष बनने का प्रस्ताव देता है जिसके बदले में उसे कॉलेज के एक राजकुमार को इंटरव्यू करने की प्रक्रिया बंद करनी होती है।

यह पात्र उस व्यवस्था और सत्ता को दर्शाता है जो शिक्षकों पर अपने सिद्धांतों से समझौता करने का दबाव डालती है। नाटक का संदर्भ एक शिक्षक को मजदूरी को दर्शाता है, जिसे अपनी सोच और सिद्धांत के बीच चुनना पड़ता है। प्रिंसिपल की भूमिका इस दबाव को दर्शाती है।

(6) चंदु :—

चंदु इस नाटक का मुख्य पात्र है। प्रोफेसर अरविंद का आदर्श छात्र भी है। चंदु एक महत्वाकांक्षी और चतुर छात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो शिक्षा तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार और राजनीति को समझता बन जाता है। वह अनुराधा का प्रेमी भी है। आधुनिक पात्र के रूप में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

परीक्षा में प्रेसीडेन्ट का क्वेश्चन पेपर लीक करने के बाद नकल पेपर बेचता है और हवा से उड़ती है थोड़ा मिलता। चंदु हाथ में लेता है उसे तब प्रिंसीपल आते हैं और प्रिंसीपल लेकर में चले जाते हैं वहां प्रेसीडेन्ट होता है। चंदु सच कुछ बतानेवाला होता है मगर कोई सुनता नहीं है। चंदु एक दिन प्रोफेसर अरविंद को सच बताता है अरविंद चंदु को मदद करना भी चाहता है मगर प्रेसीडेन्ट राजकुमार के कारण अरविंद को प्रिंसीपल को ओफरदिया जाता है। चंदु, पत्नी-व्यास, विमल चंदु, पायाय के जोस को अरविंद प्रिंसीपल को नमस्कार स्वीकार कर लेते हैं। चंदु को कॉलेज से रस्टीकेट किया जाता है। चंदु पढ़ाई छोड़के मोबाईल में घुमता रहता है।

(7) राजकुमार :—

रामकुमार कॉलेज में एक छात्र है। एक बार कॉलेज में परीक्षा होती है तो परीक्षा में नकल करता है। विमलेंदु नाम का प्राध्यापक नकल पकड़ता है। राजकुमार को विमलेंदु नाम के प्राध्यापक का गुस्सा आता है और गुण्डा के माध्यम से उसकी हत्या कर देता है।

वही घटना दो साल बाद कॉलेज में घटित हो जाती है मगर नकल राजकुमार करता है और चंदु बेचारा उसमें फँस जाता है। चंदु को परीक्षा में नकल करने के कारण कॉलेज से रस्टीकेट किया जाता है। चंदु फँस जाता है और राजकुमार प्रेसीडेन्ट का लड़का है इसलिए वह छूट जाता है।

वही राजकुमार चंदु की प्रेयसी की छेड़छाड़ करता है। अनुराधा बेचारी न्याय माँगना चाहती है मगर उसे अपने परिवार से, अरविंद से मदद नहीं मिलती। वह अनुराधा खुदकुशी कर लेती है। इसके लिए राजकुमार जिम्मेदार होता है।

8) अनुराधा :—

अनुराधा कॉलेज की छात्रा है और वह चंदु की प्रेमिका है। सामान्य कुटुंब में रहनेवाली लड़की है। शिक्षा-व्यवस्था की शिकार बन जाती है। अनुराधा चंदु से प्रेम करती है। एक दिन राजकुमार उसको छेड़छाड़ करता है वह न्याय माँगना चाहती है मगर माता-पिता उसको समझाने का प्रयास करते हैं। अरविंद सर की मदद माँग लेता है मगर सर पर अचानक दूसरी समस्या आने के कारण अरविंद उसको मदद नहीं पाता। प्रेसीडेन्ट की ओर से अनुराधा के पिता को 5 हजार रुपये दिए जाते हैं और रातोरात दूसरे जगह भेज जाने का आयोजन अनुराधा के लिए चलता है। अनुराधा को किसी की सहकार्य न मिलने के कारण वह दुःख में नीचे अपनी जान देती है।

(B) પૌરાણિક પાત્ર :—

(1) દ્રોણાચાર્ય :—

પૌરાણિક પાત્ર રૂપ માં દ્રોણાચાર્ય કી મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા હૈ। કૌરવ઼ોં ઔર પાંચ પાંડવોં કે ગુરુ થે। અશ્વત્થામા કે પિતા થે ઔર કૃપા સે પત્નિ થે। દ્રોણાચાર્ય મહાભારત કા પ્રધાન પાત્ર હૈ। નાટકકાર ને પૌરાણિક દ્રોણાચાર્ય કે ચરિત્ર કો આધુનિક શિક્ષા જગત કી વિસંગતિયોં સે જોડ઼ા હૈ। ઇસ અર્થ મેં દ્રોણાચાર્ય કે સમાન હી શિક્ષા વ્યવસ્થા કે ભ્રષ્ટ ઔર સમક્ષ્નાવાદી સ્વરૂપ કો દિખાયા ગયા હૈ।

ઇસ નાટક મેં શંકર શેષજી ને દ્રોણાચાર્ય કો અરવિંદ કે જૈસા વિદ્વાન કા પ્રયાસ કિયા હૈ। સભી ગુરુ કા પ્રિય શિષ્ય બન જાતા હૈ મગર શિષ્ય પર સમસ્યા આતી હૈ તો ઉસકી કિસી ભી તરહ કી મદદ નહીં કરતા। દ્રોણાચાર્ય ભી ઐસા હી હૈ ઔર અરવિંદ ભી ઐસા હી હૈ।

(2) અશ્વત્થામા :—

અશ્વત્થામા ઇસ નાટક કા પૌરાણિક પાત્ર હૈ। જો દ્રોણાચાર્ય એક એકલૌતા બેટા હૈ। નાટક મેં આધુનિક શિક્ષા-વ્યવસ્થા મેં ભ્રષ્ટાચાર કે વિરોધ મેં એક નૈતિક પ્રશ્ન કે રૂપ મેં પ્રસ્તુત કિયા ગયા હૈ। અશ્વત્થામા એક મહાન યોદ્ધા ઔર ધનુર્ધર થે। અશ્વત્થામા કા ચરિત્ર એક ઐસે યુવકોં કી ભાવના કા પ્રતીક હૈ જો વ્યવસ્થા સે અસંતુષ્ટ હૈ ઔર વ્યવસ્થા કે વિરુદ્ધ ખડ़ા હોતા હૈ।

ઇસ પ્રકાર, એક ઔર દ્રોણાચાર્ય, નાટક મેં અશ્વત્થામા નામ એક વ્યક્તિ નહીં વલ્કિ એક નૈતિક પ્રતીક હૈ જો શિક્ષા પ્રાંગન મેં વ્યાપ્ત ભ્રષ્ટાચાર ઔર ગુરુ-શિષ્ય કે ટૂટે-ફૂટે રિશ્તોં કે દ્યોતક હૈ।

(3) અર્જુન :—

અર્જુન પાંચ-પાંડવોં મેં સે એક હૈ

इस नाटक में शंकर शेषजीने अर्जुन को एक पौराणिक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। अर्जुन का द्वंद्वात्मक व्यक्तित्व है। एक द्रोणाचार्य ने एकलव्य से अंगूठा मांगा था तब अर्जुन ने उनसे कहा था कि यह गुरु दक्षिणा नहीं है। मुझे ये भाव उसका अपमान भी है तो में उनसे ज्यादा भारी दक्षिणा वसूल करने का प्रयास करता। उनसे (एकलव्य) से अंगूठा मांगना गलत लगता है मुझे। अर्जुन द्वंद्वात्मक भावनाओं है। नाटककार ने अर्जुन को एक ऐसे पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है जो शिक्षा-प्रणाली की विसंगतियों और चुनौतियों के बीच अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है।

4) कृपा :—

'कृपा' यह एक पौराणिक पात्र है जो अश्वत्थामा की मां है और द्रोणाचार्य की पत्नी है। एक एक बार द्रोणाचार्य से समझाती है कि अपने दुश्मन का वध्य ऐसे नहीं होना उनकी जातियों को त्यागने से मनना करनी पड़ेगी, संघर्ष करना पड़ेगा, उनमें से बुद्ध के वैराग्य बनना चाहिए तुम अपने अपमान का बदला से समझ है।

नियमतः कहा जा सकता है कि 'एकलव्य द्रोणाचार्य' इस शंकर शेष जी के नाटक में आधुनिक और पौराणिक पात्रों को समन्वय है। इस नाटक में दो समानांतर कथाएँ चलती है। दो कथाएँ एक दूसरे को पूरक है। आधुनिक कथा के आधुनिक पात्र है तो पौराणिक कथा के पौराणिक पात्र है। इन सभी पात्रों के माध्यम से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर प्रभावशाली का काम किया है।

एक और द्रोणाचार्य : समस्याएँ और उद्देश्य

"एक और द्रोणाचार्य" यह शंकर शेषजी का नाटक है। इस नाटक का प्रमुख पात्र अरविंद है। इस नाटक में लीला, चंदु, अनुराधा, विमलेंदु, प्रेसीडन्ट आदि पात्र है। इस नाटक में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा का व्यवसायीकरण, सत्ता का दबाव, शिक्षकों की उदासीनता, राजनीतिक हस्तक्षेप आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है।

समस्या :—

(1) शिक्षा व्यवस्था का व्यवसायीकरण :—

संस्था का प्रेसीडन्ट राजनेता भी है उसकी संस्थाएं भी है। संस्था का पैसा राजनीति में लगाता है और राजनीति के पैसे से अनेक संस्थाएं निकालता है। अनेक संस्थाएं खोलना शिक्षा का व्यवसायीकरण करना ही है। ज्यादा संस्थाएं खोलने से शिक्षा का दर्जा गुणवत्ता नीचे जाते है। मगर यही प्रेसीडन्ट सत्ता से और पैसे से अनेक संस्था निकालता है।

(2) सत्ता का हस्तक्षेप :—

प्रेसीडन्ट का बेटा राजकुमार कॉलेज में है। मगर राजकुमार का बर्ताव अच्छा नहीं है। परीक्षा में नकल करना, गुण्डागिरी करना, लड़कियों को छेड़छाड़ करना इसी वजह कॉलेज में रहता है। राजकुमार ने नकल की है मगर चंदु फंस जाता है। चंदु जब अरविंद सर को बताता है तब अरविंद चंदु को मदद करने का आश्वासन देता है। मगर प्रेसीडन्ट को बताता है। अरविंद वापस आ जाता है। अरविंद मानता नहीं बाद में प्रेसीडन्ट प्रिंसीपल को ऑफर देता है। अरविंद का हस्तक्षेप पसंद नहीं आता। उनका बारबार प्रिंसीपल पद स्विकारने को कहते है। सत्ता का हस्तक्षेप होने के कारण अरविंद प्रिंसीपल जैसे पद को ठुकरा देता है। चंदु को 3 साल के लिए कॉलेज से निकाल दिया जाता है।

3 શિક્ષક વર્ગ નું પતન :—

'એક ઔર દ્રોણાચાર્ય' આ નાટક માં શિક્ષક વર્ગ નું પતન પણ દેખાઈ દેતા હે. વિમલેંદુ નામક સર પ્રેસીડેન્ટ ના ~~[illegible]~~ બેટા ની પરીક્ષા માં નકલ કરતા ઉસકો પકડા જાતા હે. વહ રાજકુમાર ગુંડો ના માધ્યમ સે વિમલેંદુ કી હત્યા કી જાતી હે. વિમલેંદુ હત્યા કરના ઇસમે વિમલેંદુ કી ક્યા ગલતી હે ? રાજકુમાર અપને પિતા કે બલબુતે પર, સત્તા પર કોલેજ કે પ્રાધ્યાપક કા ખુન કરતા હે. વિમલેંદુ કા જીવન સમાપ્ત હો ગયા ના ! યાની શિક્ષક વર્ગ કા પતન હી નો હો રહા હે.

દૂસરી ઓર કોલેજ કા પ્રિંસીપલ હે ~~[illegible]~~ રાજકુમાર નકલ કરતા હે ઇસકા પરિણામ ચંદુ પર હોતા ચંદુ ને નકલ કી હે ઇસલિયે ચંદુ કો પકડા જાતા હે. ચંદુ અરવિંદ સર કે ~~[illegible]~~ બતા દેતા હે. રાજકુમાર કે વિરુદ્ધ મેં અરવિંદ સર પ્રાચાર્ય કે પાસ ઓબ્જેક્શન કરતા હે. કોલેજ કે પ્રિંસીપલ કો પિતા હે પ્રસીડેન્ટ કે દબાવ કે વિરુદ્ધ મેં ઓબ્જેક્શન આયા હે. વે પ્રાચાર્ય ડર જાતે હે. ઓબ્જેક્શન વાપસ કરને કે લિયે ~~[illegible]~~ અરવિંદ કી પત્ની ભીમા કે પાસ જાતા હે, વહ ~~[illegible]~~ હમારે અન્નદાતા હે. ઉનકે બેટે કે વિરુદ્ધ કૈસે બોલ સકતે હે ? યહ ગલત બાત હે. અરવિંદ માનતા નહિ હે પ્રસીડેન્ટ હી અરવિંદ કો સમજાતે હે.

પ્રસીડેન્ટ કા કહના હે હમારે કોલેજ કે પ્રાચાર્ય અચ્છા નહિ હોના ચાહિયે. આપકો પ્રિંસીપલ બનાના હે. આપને બેટે કો બચાને કે લિયે અરવિંદ કો પ્રાચાર્ય કા ઓબ્જેક્શન દિયા જાતા હે. ઔર ઉસ પ્રિંસીપલ કા નિકાલ કિયા જાતા હે.

ઐસા હોના ભી શિક્ષક વર્ગ કા પતન હી તો હે. પ્રાચાર્ય સર હો ઇસમે કુછ ભી ગલતી નહિ હે ફિર ભી ઉનકા નોકરી સે નિકાલ કિયા જાતા હે.

(4) **ઉદાસીનતા :** — આ નાટક માં કુલ પાંચ માં ચંદુ ઉદાસીનતા દેખાઈ દેતી હૈ પ્રેસીડન્ટ ના કાર્ય પરીક્ષા માં નકલ કરતા હૈ ઉસકા કારણ ચંદુ કો ફસાયા જાતા હૈ ચંદુ ભી ઉસ ઘટના સે પરેશાન હો જાતા હૈ પ્રેસીડન્ટ કે બચ્ચે કે વિરુદ્ધ મેં આત્મસમર્પણ કરને સે કોલેજ કા પ્રિંસીપલ ભી પરેશાન હો જાતા હૈ। ઉનકા માનના હૈ ઇસ જવાબ સંસ્થા ઉનકો માંગનેવાલી હૈ। લીલા જો જબ પતા ચલતા હૈ તો વહ ભી અપને પતિ સે બાર-બાર સમઝાને કા પ્રયત્ન કરતી હૈ। ઇસ નાટક મેં ચંદુ, પ્રોફેસર, અરવિંદ, લીલા, ચંદુ, આદિ સભી આધુનિક યુગ કે રાજકુમાર કી હરકત કે કારણ ઉદાસીન હૈ।

(5) **આદર્શવાદ કા સંઘર્ષ :** —

આદર્શવાદી હોને કે બાદ ભી સંઘર્ષ કરના પડ રહા હૈ। ચંદુ આદર્શવાદી ગાંધી હૈ। બચપન મેં ઉસકો ફસાયા જાતા હૈ। આદર્શવાદી હોને બાદ ભી ઉસકો કોઈ સહકાર્ય નહીં કરતા હૈ। ઔર ઉસકો કોલેજ સે રસ્ટીકેટ કિયા જાતા હૈ। કોલેજ સે ઘક્કા મારકે નિકાલ દિયા જાતા હૈ।

દુસરી તરફ અરવિંદ કોલેજ કા આદર્શ પ્રાધ્યાપક હૈ। સંસ્થા કી ઓર સે દબાવ ડાલ દિયા જાતા હૈ। ઉસકો પ્રેસીડેન્ટ પદ દેકર આદર્શ કા ગાંધ ફસાયા જાતા હૈ। અરવિંદ પ્રાચાર્ય પદ પર બઢ જાતા હૈ। મગર ચંદુ કો નૌકરી નહીં મિલતી હૈ ઇસકા દુઃખ હૈ। ઉસકો આદર્શવાદી હોને કે બાદ ભી, અરવિંદ સર કા સંઘર્ષ કરના પડતા હૈ।

(6) **સમાનાંતર કથાઓં કા સામંજસ્ય :** —

इस नाटक में दो कथाएं समानांतर रूप से चलती है। एक कथा आधुनिक है तो दूसरी कथा पौराणिक है।

आधुनिक कथा में कॉलेज का विभाग किया गया है। प्रेसीडेन्ट के बेटे का नशाखोरी करना, उसको जगह चंदु का पकड़ना, चंदु को सस्पेन्ड करना, बेटे को बचाने के लिए प्रेसीडेन्ट का भार से अरविंद को प्रिंसीपल का आग्रह करना, पहले प्रिंसीपल का इस्तीफा से अस्वीकार देना, प्रिंसीपल का इस्तीफा नामंजूर नहीं करता है इस दृष्टि से निकाल देना, राजकुमार अनुराधा की छेड़छाड़ करना, अरविंद एक मास्टरमाइंड, लड़की को बेइज्जत बनाना, फिर से प्राचार्य अरविंद का प्रेसीडेन्ट का दबाव आना, 15 दिन का समय लगाना, अनुराधा आत्महत्या करना आदि विविध घटनाएं आधुनिक कथा में आयी है।

पौराणिक कथा में द्रोणाचार्य के बेटे को गोरस पीने की इच्छा, द्रोणाचार्य के घर से रुपये, द्रोणाचार्य जाना और पांडवो का गुरु बनना, महाभारत बनना, अश्वत्थामा मारा जाना, द्रौपदी भरी सभा में अपमान, द्रोणाचार्य की मृत्यु होना आदि घटनाएं यह पौराणिक कथा में आयी है।

उद्देश्य :—

शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियां, भ्रष्टाचार, पक्षपात, वर्तमान आदर्शवादी शिक्षक परिस्थिति से समझौता करना। शिक्षा व्यवस्था में समस्या बढ़ी तो भावी पीढ़ी का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। शंकर शेष जी ने जिस उद्देश्य से ये नाटक लिखा है वह उद्देश्य निम्नलिखित है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(1) शिक्षा व्यवस्था की आलोचना :—

परीक्षा में नकल करना, नकल पकड़ा जाता है और दूसरा पकड़ा जाता है और इस कॉलेज से रस्टीकेट किया जाता है। एक को प्रिंसीपल बनाने के लिए पहले को निकाल देना और दूसरा प्रिंसीपल बनना भी नहीं चाहता अपने बेटे को बचाने के लिए उस प्रिंसीपल पद देना। एक विमलेंदु प्राध्यापक परीक्षा में नकल करते हुए बच्चे को पकड़ लेता है प्रेसीडन्ट का बच्चा होने के कारण वह विमलेंदु से गुण्डों जैसा व्यवहार करता है। इन सारी घटनाओं की आलोचना यहां की है।

(2) शिक्षक की त्रासदी :—

विमलेंदु की गलती न होने के कारण भी गुण्डों से उसकी आत्महत्या की जाती है। उसके मरने के बाद उसका परिवार परेशान हो जाता है उसकी पत्नी नौकरी के लिए इधर-उधर जाती है मगर उसे कोई नौकरी नहीं देता अरविंद को भी बहुत परेशानी होती है अपने प्रिय दोस्त पर अन्याय हो चुका है फिर भी अरविंद कुछ कर नहीं सकता कंचु को किसी भी तरह की मदद नहीं कर रहा है इस बात का दुःख अरविंद को होने लगता है यानी अरविंद को भी परेशानी होती है

(3) नैतिकता का पतन :—

शिक्षक के रूप में शिक्षा क्षेत्र में उसका अपमान होना, उसको खून करना, किसी बच्चे को अन्याय में फंसाना और उसको जिंदगी तबाह करना, अनुराधा को छेड़छाड़ करना, उसको न्याय न मिलना अंत में अन्याय न मिलने के कारण वह आत्महत्या करना,

આદિ અનેક ઘટનાઓ થી ખ્યાલ આવતા હોય કે આ નાટક માં શિક્ષકો નું પતન દેખાડ્યું છે. શિક્ષકો નું નૈતિક પતન થવા થી શિક્ષા વ્યવસ્થા નું ઘણું નુકસાન થાય છે અને શિક્ષા પર પ્રશ્નચિન્હ લાગે જેવું છે.

(4) સમાજ ને જગાડવા :—

કોઈ પણ સાહિત્યકૃતિ વિશેષ ઉદ્દેશ્ય થી જ લખાતી હોય છે. એક બાજુ દ્વિજાચાર્ય આ નાટક લખવા નો ઉદ્દેશ્ય સમાજ માં જાગૃતતા લાવવા નો છે. કોલેજ માં એક પ્રાધ્યાપક ને ખોટું કરવા માટે રોકવામાં આવે તો ઘણા સ્ટાફ ના લોકો ચૂપ થઈ જાય છે. પણ કોઈ વ્યક્તિ નો અવાજ બનવા નથી ઉઠતા. અનુરાધા નો દ્રષ્ટિકોણ જોવા જાય તો તે સાચી છે પણ કોલેજ અનુરાધા ને સહકાર્ય નથી કરતા. જાગૃતતા લાવવા ના ઉદ્દેશ્ય થી શેખર રાવ જોષી આ નાટક લખ્યું છે.

(5) માનવીય સત્ય ની ખોજ :—

વિમલેંદુ ની હત્યા થઈ જાય છે અને સમાજ માં તેના મરણ બાદ અલગ-અલગ ચર્ચા મરણ ના કારણ ફેલાઈ જાય છે. કોઈ કારણ ગલત પણ ફેલાય જાય છે. કોઈ પણ સત્ય-ગલત ક્યા છે તેની પરવા કર્યા વિના અફવાઓ ફેલાવા નહીં જોઈએ. કોઈ ના ચરિત્ર ને કલંકિત કરવા આપણો હક્ક નથી.

બીજું આ નાટક માં ચંદુ ને કોલેજ થી રસ્ટીકેટ કરવામાં આવે છે. પણ કોલેજ માં બધા લોકો ને માલુમ નથી કે વિમલેંદુ ની હત્યા ચંદુ એ કરી છે. ચંદુ નું ચરિત્ર ખરાબ થઈ રહ્યું છે. એટલે ચંદુ ને રસ્ટીકેટ કરવામાં આવ્યો. પણ સાચી જાણકારી નથી મળતી ત્યાં સુધી કોઈ ના ચરિત્ર ને કલંકિત કરવાનો અધિકાર આપણો નથી. સત્ય ની ખોજ કરવા ના ઉદ્દેશ્ય થી નાટક લખ્યું છે.

अनुराधा का भी किस्सा इस तरह का है वह आत्महत्या कर लेती है मगर उसकी अफवाह अलग-अलग हो फैल जाती है उसके चरित्र को कलंकित किया जाता है इसलिए सही - गलत को परखे बिना किसी को कलंकित करना भी पूरा हक नहीं है इसी उद्देश्य से शंकर शेषजी ने नाटक लिखा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह नाटक शिक्षा व्यवस्था को उजागर करता है शिक्षकों के नैतिक मूल्यों के गिरावट के लिए प्रेरित करता है और अपनी पहचान बनाने का आह्वान करता है।

શંકર પુણતાંબેકર

હિંદી સાહિત્ય મેં એક વ્યંગ્યકાર કે રૂપ મેં પ્રસિદ્ધ હૈ। દૂસરી પીઢી કે વ્યંગ્યકારોં મેં ઇનકા વિશિષ્ટ સ્થાન હૈ।

① **જન્મ** — 'કુંમરાજ' નામક કુલ પૌંચ-છહ હજાર આબાદી વાલે દેહાત મેં રહનેવાલે દક્ષિણી મહારાષ્ટ્ર, બ્રાહ્મણ પરિવાર મેં પુણતાંબેકર કા જન્મ હુઆ। ~~કુંમ~~ પુણતાંબેકર કે જન્મ તારીખ કે બારે મેં ભી કોઈ નિશ્ચિત મત નહીં હૈ। 21 મઈ -1926 આજ ભી વહી ચલ રહી હૈ।

② **માતા-પિતા** :— શંકર પુણતાંબેકર જી કે પિતા કા નામ રઘુનાથ રાવ થા। પુણતાંબેકર કી માતાજી ભી અપને બચ્ચોં કી પઢાઈ કા બહુત ખયાલ રખતી થીં। વહ સ્વયં નિરક્ષર થીં। લેકિન ચાહતી થીં કિ ઉનકે બચ્ચે ખૂબ પઢ-લિખ। સમય આને પર બચ્ચોં કી પઢાઈ કે લિએ અપને કમાયે હુએ પૈસે ખર્ચ કરને મેં ભી પીછે નહીં હટતી થીં।

③ **શિક્ષા** :— કુંમરાજ મેં નીસરી પાસ કર લેને કે પશ્ચાત જબ પિતાજી કે સાથ વે વિદિશા મેં આ ગએ। વિદિશા 'ભેલસા' કે નામ સે જાના જાતા થા। બેચક તથા ઉનકા ભાઈ ભેલસા કે એંગ્લો વર્નાકુલર મિડિલ સ્કૂલ મેં દાખિલ હો ગએ। 1933 - 1936 તક બેચક વિદિશા મેં હી રહે। મિડિલ પાસ કર લેને કે બાદ આગે ગ્વાલિયર ચલે ગએ ઔર નૌંવી કક્ષા સે બેકર બી.એ તક કી શિક્ષા ગ્વાલિયર મેં હી પૂરી કી। આગરા મેં એમ. એલ. બી કે લિએ દો વર્ષ તક રહે।

વિદિશા મેં હી ઇન્હોંને આગરા વિશ્વવિદ્યાલય સે ટીચર કેંડિડેટ કે રૂપ મેં સન 1950 મેં હિંદી વિષય તથા સન 1953 મેં ઇતિહાસ વિષય સે એમ. એ કિયા। પી.એચ.ડી (હિંદી) કી ઉપાધિ ઇન્હોંને જબલપુર મેં 1970 મેં પુના વિશ્વવિદ્યાલય સે પ્રાપ્ત કી।

Page No : VEDHA
Date : / /

(4) पारिवारिक जीवन :—

शंकर पुणतांबेकर अपनी-पिता की सांचवी संतान थे। इनमें से एक की जन्म के साथ ही मृत्यु हो गई थी। अतः इन्हें चौथी संतान ही कहा जा सकता है। इन्हें तीन भाई थे और तीन बहनें थी और सभी इनसे छोटी थी।

पुणतांबेकर का विवाह इंदौर की मालती सोलसकर से हुआ। मालती नाम बदलकर 'पुष्पलता' रखा गया। इन्हें तीन बेटे और एक बेटी है। एक बेटा अरविंद औरंगाबाद में भारतीय स्टेट बैंक में अफसर है, ~~मझला~~ दूसरा बेटा सुहास मुंबई में हिंदुस्थान कन्स्ट्रक्शन में जनरल मैनेजर अकाउन्ट्स है और छोटा मनोहर नासिक में सार्वजनिक निर्माण विभाग में डिप्टी इंजीनियर है। इन सभी के विवाह हो चुके हैं। इनकी चौथी संतान 'रश्मि' जलगांव में ही इनके पास रहती है। रश्मि डुप-चुपवाली होकर भी हालात के कारण नाराजशुदा है।

(5) पुरस्कार एवं सम्मान :—

(1) 'हरियाली और कौवे' कृति पर इन्हें केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से 'अहिंदी भाषी साहित्यकार ~~पुरस्का~~ पुरस्कार 1976 में प्रदान किया गया।

(2) 1992 में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी मुंबई का 'मुक्तिबोध पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

(3) मध्य प्रदेश साहित्य संघ, भोपाल का 'अक्षर साहित्य सम्मान' प्राप्त हुआ।

(4) 1994 में रंग चकल्लस द्वारा प्रदत्त 'चकल्लस पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

(5) 'आनंद ऋषि जी साहित्य पुरस्कार' दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद में मिला है।

6) કૃતિત્વ :—

इनकी रचनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

(1) व्यंग्येतर रचनाएँ
(2) व्यंग्य रचनाएँ

(A) व्यंग्येतर रचनाएँ :—

(1) जवाबदारी
(2) सब से आगे आदमी
(3) कलंकरेखा
(4) शीशा के टुकड़े
(5) भूख हड़ताल
(6) हरियाली और कौवे.

(B) व्यंग्य रचनाएँ :—

(1) वचनों मुझे डाकटरों से बचाओ
(2) टेढ़ीमेड कपड़े
(3) जेलरस के जाहे
(4) एक मंत्री स्वर्गवास में
(5) बचाओ, मुझे कवियों से बचाओ
(6) प्रेम विवाह
(7) अंगूर खट्टे नहीं है।
(8) विदूषक मंडरा रहा है
(9) जटबाबट
(10) पराजय की जुबली
(11) मजी से पैदा भय

अप्रकाशित रचनाएँ :—

पुणतांबेकर ने 106 मुद्रित निबंध लिखे है, जिनका प्रकाशन तीन संग्रहों के रूप में किया

③ अरण्य कांड
④ बेचारा सूरज! अरे उसे तुम उगने दो।

⑧ संपादन :—

1997 में श्रेष्ठ लघुकथाएँ नामक लघुकथा संग्रह का संपादन इन्होंने किया।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य साहित्य को समृद्ध करनेवाले शंकर पुणतांबेकर एक सिद्धहस्त व्यंग्यकार हैं। 'व्यंग्य अमरज्वाला' नामक व्यंग्य की रचना के कारण वे हिंदी साहित्यकारों में सदैव अमर ही रहेंगे।

Q- 'रावण तुम वाहट आलो' नाटक की कथावस्तु

⇒ 'रावण तुम वाहट आलो' शंकर पुणतांबेकर जी का व्यंग्यात्मक नाटक है। इस नाटक में वीरसेन, रत्ना, कुमार, शीला, विक्रम, मोहन नरेंद्र, आनंद आदि पात्र उसमें आए है। इस नाटक का प्रमुख पात्र वीरसेन है उसके ही माध्यम से आज के राजनेताओं की वित्तली उड़ान का काम शंकर पुणतांबेकर जी ने किया है। इस नाटक की कथानक निम्नलिखित है।

① वीरसेन राजा :— वीरसेन राजा है। यह राजा हमेशा अपना ही देखता रहता है, वह हमेशा अपने में कड़ रहता है। वह हमेशा अपना ही देखता रहता है। बुद्ध की सोने की मूर्ति बनाना, बुद्ध को स्नान का साबुन के लिए पलंग बनवाना है।

② समाज की समस्या :— राजा जिस समाज में रहता है उस समाज में समाज की समस्या बहुत है। वाद आतंक पूरा देश तबाही हो चुका है। भूखमरी के कारण भक्तों की मृत्यु हो रही है। लोग अन्न के कारण त्राहि त्राहि कर रहे है।

③ सोने की मूर्ति :— राजा वीरसेन ने बुद्ध की सोने की मूर्ति बनवाई है। राजा सभी से कहता है कि प्रजा न मुझे दो है। सोने की ऐसी मूर्ति बनवाना। उसके कुमार और उनकी पत्नी रत्ना को भी अच्छा नहीं लगता। मूर्ति महान लोगों की बनवाई जाती है। आज हमारे समाज में कितने महापुरुष होकर गए है, उनकी किसी की भी मूर्ति बनी नहीं है।

(4) મુલાકાત :— શીલા હમેશા મુલાકાત લેને કે લિએ રાજા કે ઘર જાતી હૈ। કુમાર સે કહતી હૈ મેં આપકી મુલાકાત લેને કે લિએ યહાં આયી હૂં। કુમાર કહતા હૈ મેં ક્યા દેખ રહા હૂં ક્યા ? મેં ઇતિહાસ કા અભ્યાસ કરને વાલા વ્યક્તિ હૂં। મુલાકાત લેના હી હૈ તો ઇસ સાંપ કી મુલાકાત લો।

(5) સોને કા પલંગ :—

રાજા વીરસેન કી ઇચ્છા હૈ કી સોને કા પલંગ ચાહિએ। મગર ઘરવાલે લોગોં કો સોને કા પલંગ દેખકર ખુશી હોતી નહીં હૈ। વિક્રમ કા એક દોસ્ત રાજા કહતા હૈ કિ તુમ મેરે પાસ સોને કા પલંગ પડા હૈ। સોને કા પલંગ દેખકર મહારાજકુંવર કો જો આનંદ મિલતા હૈ વહ આનંદ મિટ્ટી કા બડા આનંદ હોતા હૈ।

(6) પલંગ ચોરી :—

પલંગ ચોરી હો જાતા હૈ। રાજા ઇધર-ઉધર દેખતા હૈ। પમ્માર લોગોં કો કહાં સે પતા ચલતા હૈ યહ પતા નહીં ચલતા। શીલા સે વિક્રમ કહતા હૈ ઇજ્જત કે લિએ ઇસ પુસ્તક કો જિતના દબાના હૈ ઉતના દબા દો। ઔર હમારા પલંગ ચોરી હુઆ હી નહીં હૈ ક્યોંકિ હમારે પાસ સોને કા ~~હૈ~~ નહીં થી કુમાર શીલા સે કહતા હૈ જિતના હો સકતા હૈ ઉતના ઇસ પુસ્તક કે અંત તક જા તો આપકો સારી બાતેં સમઝ મેં આ જાયેંગી।

(7) आवाज आना :—

राजा विक्रमसेन के सोने का पलंग लिया था तब से राजा को बाहर से आवाज आती थी 'रावण तुम बाहर आओ' यह आवाज बार-बार आती थी राजा को रावण याद सुनाई देता था मगर माहन विक्रम और इनको राम याद सुनाई देता है एक बार विक्रमसेन कहता है या मैं बाहर नहीं आऊँगा

(8) गौरवग्रंथ :—

बाहर से बार-बार आवाज आने से राजा विक्रम को अपना गौरवग्रंथ दिखाता है मेरा समाज ने गौरव किया है यह देख कितना बड़ा गौरवग्रंथ है आदित्यपाद ने शत्रुंजय इस ग्रंथ को संपादित किया है में कहता कि इसमें यह गौरवग्रंथ लिखा है

(9) पलंग पर कुमार की प्रतिक्रिया :—

कुमार अपने बापु से कहता है कितना ये समृद्ध है कितना जन्दा इस पलंग को यहाँ से हटा दो। यह सोने का पलंग चोरी हो चुका है पर कुश को बापु पर शक है। इनका देश से विदेश पर भरोसा है यहाँ का चश्मा का मान दूसरे देश में छुपाए रखते है। कुमार जो बापु का विरोध करता है तो शेमर पुणतोबेकर इस पात्र के माध्यम से अपनी बात व्यक्त करते है

Page No. : VEDHA
Date : / /

(10) જ્યોતિષી નો આગમન :—

સોના નો પલંગ ચોરી હો ચુકા હૈ
ઇસલિએ જ્યોતિષો નો બુલા ભેજા હૈ।
જ્યોતિષો નો બતાતા હૈ કી ક્યા ઉપાય
કરના હોગા ક્યા? રાજ વારસદાર
ઉનકો કહતે હૈ કિ મેરા પ્રસેનજિત પુત્ર હૈ।
મેરા સોના નો પલંગ ચોરી હો ચુકા હૈ
ચોર નો પતા નહિં મિલ રહા હૈ।

(11) જાવા ફેસ :—

ચોર નો પતા લગાને
કે લિએ જ્યોતિષો રાજા નો જાવા ફેસ
દેતા હૈ। ઔર યહ ભી કહતા હૈ
કી યહ ફેસ ~~જિસકા~~ જોસ નો સબકો
બતાના વહ સત્ય બોલનેવાલા હોગા ઔર
જિસકો યહ ફેસ જોવા લગેગા વહ ઝૂઠ
હોગા ઐસા જ્યોતિષી રાજા નો બતાતા હૈ
જ્યોતિષો ને ~~જ~~ જૈસા બતાયા વો વૈસા રાજા
કરને લગતા હૈ

(12) નરબલિ યજ્ઞ :—

જ્યોતિષી ને કહા હૈ
સોના નો પલંગ ગયા હૈ તો રાજગુરુ માને
નો ચિંતા હુઆ હૈ। ઔર ગ્રંથ નો
શાંતી કરને નો સલાહ દે સકતા હૈ
એક યજ્ઞ કરના પડેગા ઔર ઉસ યજ્ઞ
મેં એક નરબલિ દેના પડેગા। જ્યોતિષ
નો ભી કહા રાજા નો ઐસા લગને લગતા
હૈ। રાજા ભાગા ભાગા નૌકરો કો ~~ક~~
ભેજકર સોચને લગતા હૈ। ઔર ઐસા લગા
હૈ ઔર ઉસમેં નરબલિ દેના હૈ।

(13) 4 लोगों की मुलाकात :—

मोहन नटवरलाल की तैयारी करने लगता है। 4 लोगों की अलग-अलग मुलाकात की बात बताता है। पहला कहता है मरा नटवरलाल कोई चक्कर में फंस जाता है। दूसरा कहता है कि तुम मेरे नटवरलाल नहीं लग सकते तुम कौन हो - तुम क्या महान हो - दोनों की बात नहीं करो। तीसरा कहता है - मैं तुम्हारे राज्य में इस बात का जिक्र किया है। चौथा व्यक्ति राजा को बेटा कुमार बताता है वह कहता है मैं इस अन्याय को सहन-सहन तंग आ चुका हूं इसलिए नटवरलाल मरी मां को।

(14) वीरसेन की मृत्यु :—

ज्योतिषी ने राजा वीरसेन को कहा की मैं चोर का आधा नाम बताने वाला हूं और यह का शुभमुहूर्त निकालना है इसलिए हम सीधे तुम में जाएंगे। राजा कहता है चलो हम तुम पर जाएंगे। राजा को भी खुशी होती है की चोर का पता चलने वाला है। तुम पर सिड़िया चढ़ते समय राजा का पैर फिसल जाता है और वहां राजा वीरसेन की मृत्यु हो जाती है।

(15) राजा की मृत्यु पर प्रतिक्रिया :—

वीरसेन राजा की मृत्यु होने पर एक व्यक्ति आता है और कहता है अरे राजा को किसने मार दिया मार दिया एक व्यक्ति उसकी [illegible] वाले को [illegible] कहता है की

Page No :
Date : / /
VEDHA

उनकी मृत्यु पर पूरे 3 दिन का हर्ष मनाते मरने पर दुःख होता है मगर यहां हरिश्ची का चुराई हुई है।

(16) राजा विक्रम :—

राजा वीरसेन के मरने के बाद इलेक्शन होता है। इस चुनाव में विक्रम का 'चिंकू' होता है। नटवु-मालु आनंदु का 'गायला' चुनाव निशान होता है। विक्रम चुनाव जीत जाता है और राजा व राजा वीरसेन के राजगद्दी पर राजा बैठ जाता है।

(17) कुमार की मृत्यु :—

ने कुमार की नाटकमार शंकर पुणतांबेकर मृत्यु का कोई कारण नहीं दिखाया है। एक बार मरने लगता है 15 दिन हो गए अभी भी कुमार और शीला की लाशें का पता नहीं चल रहा है। विक्रम के आँखों में आंसू भी आता है। मरने के विक्रम से मिल आपने वहां उनका क्या भुगवाया इतना विक्रम कहता है मुझे क्या पता वहां कैसा हुआ होगा। कुमार और शीला का नव पुनर्जन्म न मान के गई थी। अभी भी उनकी लाश मिली का नहीं मिल रही है।

Page No. :
Date : / /
VEDHA

નિષ્કર્ષ : આ પાઠ આપણે ચંદ્રશેખર પુણતાંબેકર દ્વારા લખાયેલ વ્યંગપ્રધાન નાટક છે. આ નાટક આ રાજા અવિવેકી, આળસુ, સ્વાર્થી અને ભ્રષ્ટાચારી છે એ હંમેશા આપણા ધ્યાનમાં રહેવા જોઈએ.

Q. 'रावण तुम वाहर आओ' शंकर पुणतांबेकर के नाटक के पात्र का चरित्र-चित्रण - या पात्र

→ 'रावण तुम वाहर आओ' यह शंकर पुणतांबेकर का नाटक है। यह नाटक व्यंग्यप्रधान है। इस नाटक में राजा वीरसेन, रत्ना, कुमार, विक्रम, मोहन, नरेंद्र, आनंद, शीला, युवती, I-II-III, आदि पात्र इस नाटक में आए है। इस नाटक में कुछ पात्र प्रमुख है तो कुछ पात्र गौण है मुख्य पात्रों पर नाटक चलता है मगर बीच-बीच में कुछ पात्र ~~प्रमुख~~ प्रमुख पात्रों को गति देने के लिए गौण पात्र भी अपनी भूमिका निभाते है। इन सभी पात्रों का विवेचन निम्न-लिखित है —

(1) राजा वीरसेन :—

इस नाटक का प्रमुख पात्र राजा वीरसेन है। इस नाटक में राजा वीरसेन पर यह कथा चलती है। राजा एक बार बुद्ध की सोने की मूर्ति बनवाता है। राजा सभी को बनाता है की प्रजा ने मुझे प्रेम से दी है। प्रजा न नहीं दी होती। राजा ही बुद्ध बनवाता है। उनका बेटा कुमार है। उसका पिता ने बनवाई हुई सोने की मूर्ति अच्छी नहीं लगती है। लगता है मधुपुष्पा की सोने की मूर्ति चुनी है। मधुपुष्प में गंध, आकर्षक होकर गायक है आज तक उनकी सोने की मूर्ति नहीं बन पाई है। अच्छा मधुपुष्प को समझ नहीं मूर्ति नहीं बनी। असली सोना वहीं भाग्य का राजा की इच्छा है की उसके पास सोने का पलंग सोने के लिए है। राजा सोने का पलंग बेचने जाता है। राजा को खुशी हो जाती है वह मिठाई भी बांटने जाता है। कुछ देर के बाद राजा ~~[illegible]~~ के सोने का पलंग चोरी हो जाता है। राजा परेशान होता है। कहीं पर भी पलंग न मिलने पर राजा सत्यवती को बुलाता है क्योंकि राजा को एक ज्योतिषी बताता है इस दुनिया

देता है यह देख पहलवान सभी के पास जाना और उनसे
इस का कारण पुछना । जो भी लड़े इस कलर का
रंग सफेद कहेगा समझना वह देशभक्त है जिसका
यह कलर काला दिखेगा वह देशद्रोही है यह
समझना । राजा इस पहलवान सभी के पास जाता है
ज्योतिषी ने राजा को यह भी कहा था
आपको एक यज्ञ करना है उस यज्ञ में नरबलि
करना है एक व्यक्ति का नरबली यज्ञ में देना
पड़ेगा । सोजा नरबलि की दृष्टि से अभागा का बुलावा
भी लेता है । बुलाकर में पहले व्यक्ति को बुलाया जाता
है - उसे कहा जाता है तेरा नरबली बनना है वह व्यक्ति
कहता है मुझे जाना है । राजा कहता है तुझे क्यों जाना
है । तब वह पहलेवाला व्यक्ति कहता जो लाख
रुपये करके जीवन जीने है उनको बुलाकर क्यों जाना
है पहलेवाला ज्यादा बकबक करता है उसे छोड़ दिया
जाता है ।

दुसरे व्यक्ति को बुलाकर लेते है वह व्यक्ति
नरबलि के बारे में कहता है आप क्या महापुरुष
है जो मेरा नरबलि लेनेवाले है । आप कौन होते
है आप तो दो कौड़ी का व्यक्ति है । आपको मुझे
भी पहचान नहीं है बार-बार बक-बक करने से
उसको भी छोड़ दिया जाता है । तीसरे व्यक्ति को
बुलाया जाता है उस नाम पुछा जाता है तो
वह कहता है मेरा नाम वीरसेन नहीं है यह पुछा
मालूम । जहाँ रहता है - आपके राज्य में रहता
हूँ इस बात का दुःख है ।

ज्योतिषी राजा को कहता है की मुझे
आपका यज्ञ का शुभमुहूर्त निकालना है और चोर
का आधा नाम भी बताना है इसलिए सोकर कुछ में
जाना पड़ेगा । राजा वीरसेन उसका ऊपर की कलर
में भेज जाता है । जाते समय राजा का चिढ़ाये
चढ़ते समय पेड़ पर बिसल जाता है और वहाँ पर
राजा को भेजने की योजना है ।

राजा के बेटे का नाम कुमार और
उनकी पत्नी का नाम रत्ना थी । राजा भविष्य,
भावना, स्वप्न, भ्रष्टाचार आदि

देता है यह इस पहलवान सभी के पास जाना और उनसे इस का नाम पुछना। जो भी लड़े इस नगर का राजा समझना वह क्षत्रिय है ~~जिसके~~ यह नगर त्याग दिजिए वह ~~दुसरे~~ देश श्रेष्ठ है यह समझना। राजा इस पहलवान सभी के पास जाता है ज्योतिषी ने राजा को यह भी कहा था आपको एक यज्ञ करना है उस यज्ञ में नरबलि करना है एक व्यक्ति का नरबली यज्ञ में देना पड़ेगा। राजा नरबलि की दृष्टि से उन्हें बुलाने के लिए भेजता है। बुलाने में पहले व्यक्ति को बुलाया जाता है - उसे कहा जाता है तेरा नरबली बुलाने है वह व्यक्ति कहता है मुझे जाना है। राजा कहता है तुझे क्यों जाना है। तब वह पहलवाला व्यक्ति कहता है जो लाख राक्षस। मरके जीवन जीत है उनसे पुछो क्यों जीना है पहलवाला ज्यादा बलवान कहता है उसे छोड़ दिया जाता है

दुसरे व्यक्ति को बुलाने जाते है वह व्यक्ति नरबलि के बारे में कहता है आप क्या महापुरुष है जो मेरा नरबलि लेनेवाले है। आप कौन होते है आप तो टुकड़ो का व्यक्ति है। आपको तो किसी भी पहचान नहीं है बार-बार बक-बक करने से उसको भी छोड़ दिया जाता है। तिसरे व्यक्ति को बुलाया जाता है उसे नाम पुछा जाता है और वह कहता है मेरा नाम वीरसेन है यह पुछा मालूम। कहाँ रहता है - आपके राज्य में रहता हूँ इस बात का दुःख है

ज्योतिषी राजा को कहता है की मुझे आपके यज्ञ का शुभमुहूर्त निकालना है और चार का आधा नाम भी बताना है इसलिए सोचने हेतु में जाना पड़ेगा। राजा वीरसेन उसको ऊपर के कमरे में भेज जाता है। जाते समय राजा का चिड़िये चढ़ने समय पेड़ पर फिसल जाता है और वहाँ पर राजा को मेलुछ हो जाती है

राजा के बेटे का नाम कुमार और उनकी पत्नी का नाम रत्ना थी। राजा भविष्य, आलसी, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी था

(2) રત્ના :—

રત્ના રાજા વીરસેન ની પત્ની છે
યદિ જબ બુદ્ધ કી સોને કી મૂર્તિ ઔર સાંપ કા વિષ
સાંપ કા પલંગ બના હૈ તબ રત્ના કા અપના
નહિં બનાના રાજા કા ક્રોધ જાનના કી યુક્તિ
કરના હૈ રત્ના પુનર્જન્મવાદી વિચારધારા કી હૈ
એક બાર શોભા અપને ઘર મુલાકાત હેતુ આતી હૈ તબ શોભા સે કહતી હૈ મેરા મુલાકાત હેતુ
સે ક્યા હોનેવાલા હૈ મેં તો હમેશા ખુશ રહતી
હૂં યદિ પ્રથમ યા નહીં વહ દુઃખી થી પતિ મર
મર ગયા હૈ તો વહ સબસે દુઃખી હૈ ક્યોંકિ સબ
ઉસકા સૌભાગ્ય ચલા ગયા હૈ રત્ના કે બેટે કા
નામ કુમાર થા

(3) કુમાર :—

કુમાર રાજા વીરસેન કા એકલૌતા
બેટા હૈ કુમાર કી માં કા નામ રત્ના થા કુમાર
પિતા કો હમેશા ગુપ્તરૂપ નિષ્ક્રિય રહતી થી પુત્ર ને
એક બાર બુદ્ધ કી સોને કી મૂર્તિ બનવાઈ થી
પિતા સે કહતા હૈ આપ ક્યા મહાપુરુષ હૈ જો સોને કી
મૂર્તિ બનવાઈ હૈ સભ્ય મહાપુરુષો કી સોને કી મૂર્તિ
નહિં બનતી સોને કા પલંગ જબ દરબાર મેં
આતા હૈ તો કહતા હૈ જિતના જલ્દી હો સકતા હૈ
ઉતના જલ્દી યહ વસ્તુ યહાં સે હટા દો।

સોને કા પલંગ આને પર ધન પર પશ્ચાત્તાપ
લોગ કુમાર સે કહતે હૈ આપ લોગોં કા જિસ પર
રાજ હૈ તબ કુમાર કહતા હૈ ~~મેરા~~ મેરા વાપસ
ક્યોંકિ ઇનકા વિશ્વાસ દેશ સે જ્યાદા વિદેશ પર હૈ
યહાં કા સંપત્તિ દૂસરે દેશ મેં રહતે હૈ। ઉનકે
ક્યા પલંગ ચાંદી કા બના તો દૂસરા બનતે હૈ પુરુષાર્થ
વિદેશ મેં રહતે હૈ કુમાર કા ભાગ્ય વિક્રમ હૈ વહ
જો ~~ઉસે~~ ઉસે હમેશા મદદ કરતા હૈ

વાપુ કા મૃત્યુ કે બાદ વિક્રમ રાજા બનતા
હૈ પિતા મરને પર કુમાર ને કહાં થા દુઃખ કિસી કો કુછ
નહિં હૈ ~~કુ~~ ઔર કિસી કા ક્ષતિ મેં ભી નુકસાન હુઆ
નહિં હૈ દુઃખ હુઆ હૈ તો સિર્ફ મેરી માં કા
પહલે વાપુ કે ~~વહ~~ સૌભાગ્યવતી થી ફિર ભી રાજા

Page No. : VEDHA
Date : / /

રાજા જો હરાવતાં કે કારણ દુઃખી રહતી થી। અબ વાપુ ગઇ તો વહ ઉસકા સૌભાગ્ય ચલા ગયા ઇસ કારણ દુઃખી હૈ।

શીબા કે સાથ કુમાર ઘુમને કો જાતા હૈ વહાં જાને પર નાવ પલટને સે દોનો કી વહીં મૃત્યુ હો જાતી હૈ મગર ડેઢ સૌડા અભી ભી કિસી સે મિલતી નહિં હૈ। ૧૬ દિન હો ગયે જોર કર રહે હૈ।

(4) **વિક્રમ :—** વિક્રમ પહલે વિદ્યાપીઠ મેં પ્રોફેસર થા। અબ વહ રાજનીતિ મેં આયા હૈ। કુમાર કે સાથ રહતા હૈ। રાજા જબ પલંગ પર હો જાને પર વહ કહતા હૈ કિ શીબા જો પ્રમાણ હૈ, ઉસકો કહના જિતના હો સકતા હૈ ઉતના ઇસ પ્રકાર પ્રકરણ કો દબાના પડેગા। બાહર જન-જનત યહ પ્રકરણ જાના નહિં ચાહિએ।

રાજા વીરસેન કી મૃત્યુ હો જાને પર વિક્રમ ને કહાં થા આજ્ઞા હો ગયા। જો મરેગા ઔર ઉસને યહ નહિં કહા થા રાજ વીરસેન કી મૃત્યુ પર હમ ઉસકા હર્ષ મનાએંગે। રાજા કો મુનિ જી વાર્તા બુલાતે હોતા હૈ। વિક્રમ કા ચિહ્ન 'ચાંદ' હોતા હૈ। વિક્રમ રાજા વીરસેન કી ગદ્દી પર રાજા બનને જાતા હૈ। કુમાર ઔર શીબા કી મૃત્યુ કા સમાચાર સુન વિક્રમ કે આંખોં મેં આંસુ આતે હૈ।

(5) **શીબા :—** શીબા એક પ્રમાણ હૈ। રાજવીરસેન કે ઘર હમેશા આતી હૈ પલંગ ચારો ઓર પર સભી સે પ્રશ્ન પુછતી હૈ કિ રાજા કિસ પર હૈ। શીબા ભી એક પ્રતિભાશાલી વિચાર ધારા કી વ્યક્તિ હૈ। કુમાર પર પર કી તોડને કા કામ કરતા હૈ તબ શીબા કુમાર કા સબ ભવિષ્ય બતાતા હૈ। સોને કી મૂર્તિ પર કહતી હૈ ઇસ રાજ કી મૂર્તિ કો રુલાકે નહિં દેના હોગા, જુઠ બોલના નહિં હોગા,

Page No. : VEDHA
Date : / /

કુમાર ને સાથે બહાર ઘુમવા જાતી હતી ત્યારે ત્યાં તેની નાવ પલટાઈ જાતી હતી અને ત્યાં શીલા ની મૃત્યુ થઈ જાતી હતી

(6) **જ્યોતિષી :** — સોના નો પલંગ ચોરી થી લાવ્યો હતો અને તેના પલંગ નો પતા કોઈ પણ જગ્યા પર થી નથી મળતો હતો તો તે રાજા વારસને જ્યોતિષી નો ખુલાસો કરતો હતો તે રાજા ને એક જાલો ફેંસુ દેતા હતો અને તેને કહેતા હતો કે આ ફેંસ પહેરીને સભા માં જાજો અને ત્યાં પુછવા જિસ ફેંસ ઉપર જે ઝાડ હોય ના કહેના તે ઢોંગી છે અને તેને ચોર સમજવા જો તો તે દુરાચારી છે એવા સમજવા પછી વાદ માં રાજા ને કહેતા કે પલંગ ચોરી થી ચુકયા છે અને રાજગઢી માં ક્રોધ જાગી સંભાવના છે ઈસલિએ નગરજનો ની શાંતી કરની પડશે અને યજ્ઞ માં નરબલિ દેવા પડશે રાજા ના ચોર ના ભાઈ ગામ બતાવા છે જ્યારે યજ્ઞ ના શુભમુહૂર્ત નિર્ણય છે ઈસલિએ રાજા એક સોકેટ કુવા માં જાતા છે

(7) **મોહન :** — રાજા ના દરબાર ના એક વ્યક્તિ છે તે હમેશા રાજા વારસને ની પ્રશંસા કરતા રહેતા છે મોહન એક ઢોંગી છે તેમા ભિમ નરેંદ્ર અને આનંદ છે રાજા ની નરબલિ દેવા છે યજ્ઞ માં ઈસલિએ પૂજા ને ૩ યોગીઓ ને બુલાવા જાતા છે રાજા મરણ પર ચુનાવ ઈસલિએ થઈ જાતા છે અંત માં ચુનાવ માં હારી જાતો છે

(8) **આનંદ :** — આનંદ પણ રાજા ના દરબાર ના વ્યક્તિ છે તે પણ ઢોંગી છે મોહન અને નરેંદ્ર તેના દોસ્ત છે રાજા ના પલંગ ચોરી થયા પર દુખ છે રાજા ને ~~કે~~ ઈસ ના

प्रशंसा करता है। राजा मरने पर जय या अक्षय हो गया। मर गया अब हम सुनुन स रहा है।

(9) नेरंद्र :—

नेरंद्र राजा के दरबार का एक पंडित है। वह भी एक दरबारी है। हमेशा कोशिश करता रहता है। और कहानी में मेरा किरदार सबसे ज्यादा नहीं है। में राजा बनुगा। नेरंद्र - मोहन और आनंद निम्नलिखित में मुख्य रूप से है कि राजा बीरबल को हम मारेंगे और जहाँ से एक राजा बनेगा। राजा बीरबल की मृत्यु के बाद नेरंद्र को या उनको कहाँ भागने में कुछ देंगे।

(10) पिंजरे की कैद :—

राजा जब भी बीरबल या नवरत्न हमेशा राजा पर व्यंग्य करते रहते थे। राजा को जब सजा का प्रबंध बताया या तब वह पिंजरे की कैद करती है। बुद्ध को देख सजा के प्रबंध पर सोच का जनता जाएँ या भाड़ में।

(11) युवती :—

प्रजा में से एक युवती है वह विधवा है। वह बेटी कहते अपना जीवन बीता रही है। एक दिन शेर ने उसके जमीन पर कब्जा कर किया था इसलिए राजा के पास मदद मांगने के लिए आती है। मगर उसका राजा कुछ भी तब की मदद नहीं करता। वह वहाँ से गुस्से से चली जाती है।

(12) युवती का बेटा :—

युवती को देता है। वह राजा के पास मदद मांगने के लिए आयी है। वह सीधे ना पूर्वक आया है, मिठाई या रुई है। उसे वजन वह बेटा मॉ से लगता है मॉं मुंह मुंह फूला है। उसे भी मिठाई देना है तब वह लड़का कहता है मॉं यह रोटी नहीं है तब वह युवती कहती है यह अमीरों का रोटी है।

(13) भामाशाह :— जब राजा सोने का पुतला बनवाता है तब कुमार को बहुत बुरा लगता है। ऐसे समाज में आज समाजसुधारक की जरूरत होती है। कम से कम तुम भामाशाह तो होना चाहिए। अच्छा किया तुम भामाशाह आए थे। कुमार विचार करता है तो उसी वक्त वह भी भामाशाह के बात है आज समाज में जो समस्या है उसी समस्या के लिए समाजसुधारक ने लड़ना चाहिए। भामाशाह आता है और कुछ बातचीत करके वहां से जाता है कुछ समय के बाद पता चलता है की विक्रम से पता चलता है कि वह भामाशाह नहीं था वह तो ऐसे ही आवारा व्यक्ति था।

(14) I का व्यक्ति :— राजा का सोने का पुतला चोरी हो चुका है और ज्योतिषी ने उनका जो हल बता करना है उसमें नरबली देना है। इसलिए सब प्रजा में से 4 लोगों का ड्रॉ आता है। उसमें पहला व्यक्ति आया है। राजा उसको उसके पहले हुआ है उस का रंग पूछता है और उसे कहां जाता है सुई तेरी नरबली लेना है। तब वह व्यक्ति कहता है मुझे जीना है तुम मेरी नरबली नहीं ले सकते और कहती है मुझे जीना है तब राजा उसे कहता है मुझे क्यों जीना है ? तब I व्यक्ति कहता है उन लोगों का शोषण करके जीते हैं उनसे मुझे क्यों जीना है वह व्यक्ति बार-बार बक-बक करता

इसलिए राजा उसे छोड़ देता है।

15 II व्यक्ति :— दूसरा व्यक्ति वहां से राजा के दरबार में आता है। राजा उससे प्रश्न पुछता है। मेरा देश कलह का नाम बता। तब वह कहता है कि मुझे उत्तर है मैं। राजा उससे कहता है तेरा नरबलि के लेना है। तब वह कहता है तु क्या शिवाजी महाराज, भांडेकर है क्या। तु कौन होता है मेरा नरबलि लेनेवाला। दो कौड़ी का जड़ मूर्ख। मेरा पहचान जाएं अपना परिचय दे तेरे पहचान कुछ भी नहीं है। बार-बार वाद-विवाद करने से राजा उसे छोड़ देता है।

16 III व्यक्ति :— तिसरा व्यक्ति भी राजा के दरबार में आता है राजा उनसे प्रश्न पुछता है तेरा नाम क्या है? तब वह कहता है वीरेश्वर नहीं है यह पक्का मालूम है। मगध देश का हूं राज्य में रहता हूं इसी बात का दुःख है मैं तेरी नरबली लेनेवाला हूं। तब वह कहता है मैं तेरे छाती पर रोटी सांसन कुटुंब आया था तब आपन मुख द्वारा से धक्का मारके भिजवाया था। राजा सुनकर वह कहता है इस बारे में वैद्य मरा और उसे फटकार मारके हमें इसकी ही कथा लगा है।

निष्कर्ष: कह जा सकता है की इस 'रावण तुम बाहर आओ' इस नाटक में कुछ पात्र गौण आए है तो कुछ पात्र प्रमुख आए है इन सभी पात्रों के आधार पर रंगकर्मी पुणतांबेकर ने नाटक व्यंग्यपूर्ण नाटक लिखा है। इस नाटक के माध्यम से और कुछ पात्रों के माध्यम से आज की राजनीति दिखाने का काम किया है।

इसलिए राजा उसे छोड़ देता है।

15 II व्यक्ति :—

दूसरा व्यक्ति वहाँ से राजा के दरबार में आता है। राजा उससे प्रश्न पूछता है। मेरा इस कलह का नाम बता। तब वह कहता है जिस दुष्ट के उत्तर दो मैं। राजा उससे कहता है तेरा नरबलि लेना है। तब वह कहता है तु क्या शिवाजी महाराज, आंबेडकर है क्या। तु कौन होता है मेरा नरबलि लेनेवाला। दो कौड़ी का कवि का। सेठ पर जाल अपना परिचय दे तेरा पहचान कुछ भी नहीं है। बार-बार बक-बक करने से राजा उसे छोड़ देता है।

16 III व्यक्ति :—

तीसरा व्यक्ति भी राजा के दरबार में आता है। राजा उसे प्रश्न पूछता है तेरा नाम क्या है? तब वह कहता है वीरेन्द्र नहीं है यह पक्का मालूम है। मैं कहता हूँ और राज्य में रहता हूँ इसी बात का दुःख है। मैं तेरी नरबली लेनेवाला हूँ। तब वह मैं तेरे ऊपर पहले मांसल जुल्म आचार या तब आपन मुझे द्वारा से धक्का मारके भेजवाया यही राजा मोहन से कहता है इस जगह में बैठे मरो और उसे जटमार मारे हमें इसकी ही कवि लगा है।

निष्कर्षतः कह जा सकता है की इस 'रावण तुम बाहर आत्मा' इस नाटक में कुछ पात्र गौण आए है तो कुछ पात्र मुख्य आए है इन सभी पात्रों के आधार पर शंकर पुणतांबेकर ने नाटक लिखा है। इस नाटक के माध्यम से और कुछ पात्रों के माध्यम से आज की राजनीति दिखाने का काम किया है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

'रावण तुम वाहर आओ' इस नाटक की समस्या और उद्देश्य -

→ डॉ. शंकर पुणतांबेकर के नाटक 'रावण तुम वाहर आओ' का उद्देश्य और समस्या स्वातन्त्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करना और उसकी समस्याओं को उजागर करना है। नाटक समकालीन व्यवस्था के मुखौटों को उतारता है जिसमें भ्रष्टाचार, उत्तरदायित्वहीन राजनीति, जाति व धर्म पर आधारित वैमनस्य और आर्थिक संघर्ष प्रमुख समस्याएं हैं जिनसे आम आदमी पीड़ित है।

नाटक का उद्देश्य :—

(1) **भ्रष्टाचार का पर्दाफाश :—**

नाटक का मुख्य उद्देश्य शासन और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को सामने लाना और जनमानस में फैली माहभंग की भावना को व्यक्त करना है। नाटक में सुमार के माध्यम से विधान का प्रयास किया है।

(2) **व्यवस्था पर व्यंग्य :—**

लेखक अपनी व्यंग्यात्मक शैली का उपयोग करके समकालीन सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की असफलता और अक्षमता को उजागर करते हैं।

(3) **जनमानस की वेदना :—**

Page No. : VEDHA
Date : / /

नाटक में डॉ. पुणतांबेकर ने जुनमानस्य की वदत्ता, सपनों के बुचने जाने और मोहभंग को दिखाया है, जिससे वे अपने समय के प्रमुख भाष्यकार बन जाते हैं। राजा के दरबार में एक युवती आती है। राजा दरबारियों से उसी समस्या को कहती है - दुश्मन ने मेरे जमीन पर कब्जा कर लिया है। अब मेरा जीवन पानी का सहारा होने गया है। बार-बार राजा से कहती है मगर राजा को उसकी बात का प्रभाव पड़ता नहीं है। समाज में भुखमरी है, बीमारी की दवा नहीं मिल रही है, समाज में बाढ़ आ चुकी आदि अनेक समस्या है मगर राजा किसी भी समस्या का समाधान करने का प्रयास करता नहीं है।

(H) राजनीति भाष की :—

आज हमारे यहां राजनीति किस तरह चल रही है इसका उदाहरण राजा दरबारियों के माध्यम से दिखाया है राजा दरबारियों राजा के ऊपर समाज की किसी भी समस्या का समाधान करने का प्रयास नहीं करता। युद्ध की ही स्वार्थ देख पता है युद्ध की सामग्री मूर्ति बनाना, युद्ध के सामने के लिए सभा का पर्दा बनवाना सब अपने ही देख लगा है और कुछ सूझ कहां है जनता के मुख प्रश्न से दिया है।

आज के राजनेता भी ऐसे ही कहते हैं युद्ध का स्वार्थ देख पड़ता है। जनता की समस्या का उनको कुछ भी लेना-देना नहीं है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(5) जैसा कर्म वैसा फल :—

मनुष्य जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। राजा दशरथ ने सोने का पक्षी बुद्ध को सोने के लिए बनवाया था मगर वह उनको पैसा वसूल करके वनवास था। चोरी से पक्षी आया था भाग चोरी से चला गया है। मनुष्य जैसा करता है वैसा कर्म उसके पास आता है। यह राजा को देखने के बाद दिखाई देता है। यही लिए नरक्ति दूसरों को लूना चाहना था अब उसकी ~~~~ ही मृत्यु हो चुकी।

नाटक की समस्या :—

(1) भ्रष्टाचार और स्वार्थ :—

नाटक में दिखाया गया है की भ्रष्टाचार जिस नाटक होता है राज्य के सेठ जनता के पैसे से बुद्ध को सोने की मूर्ति बनवाता है और बुद्ध को सोने के लिए सोने का पक्षी बनवाता है राजा के कर और भ्रष्टाचार है और उसमें सिर्फ उसका स्वार्थ है।

(2) उत्तर दायित्वहीन राजनीति :—

स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में जनहित की अनदेखी और स्वार्थ की भावना प्रमुख समस्या है, जो जनता के सपनों को साकार होने से रोकती है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

રાજા હોવા પર સમાજ માં વાદ આવી છે, આર્થિક વિષમતા ચૂલ રહી છે એવે સામાજિક વાતાવરણ માં રાજા ને કુછ ના કુછ તો મદદ કરના ચાહિએ મગર રાજાવીરસેન કુછ ભી મદદ નહિં કરતા યુદ્ધ ના સ્થાને દેખાયા છે

(3) જાતિભેદ અને ધર્મભેદ :—

શ્રવણ તુમ બાહર આઓ ઇસ નાટક માં જાતિભેદ છે યહ કહિએ નહિ ચાહિએ યા ઉસમાં ૩ નં. વ્યક્તિ ઉસમાં કહતા હૈ મેં આપકે દ્વાર પર રોટી માંગને આયા થા મગર આપ લોગોં ને મુઝે યહાં સે નિકાલ દિયા યા અને દરવાજા બંદ કિયા થા આપને યહ સબ જાતિ અને ધર્મ કે આધાર પર કિયા થા

(4) આર્થિક સંઘર્ષ :—

ઇસ નાટક માં આર્થિક સંઘર્ષ દિખાયા ગયા હૈ રાજા જનતા કી પૈસે સે સોના કી મૂર્તિ બનવાતા હૈ। રાની કા પલંગ બનવાતા હૈ મગર જનતા કે દૈનંદિન ચીજ વસ્તુઓ કે લિએ પરેશાન હૈ સમાજ મેં વાદ આને લગી હૈ। સમાજ વાસ્તવ મેં ઐસા હૈ યુવતી કી જમીન પર સેઠ ને જબરજસ્તી કર લિયા હૈ રાજા ઉસ યુવતી કી કિસી ભી તરહ કી મદદ કરતા નહિં હૈ યુવતી ગુસ્સે સે ચલી જાતી હૈ

Page No. : VEDHA
Date : / /

(5) संस्कृति और मूल्यों का ह्रास :—

समाज के दीन-हीन व्यक्ति को मदद करनी चाहिए, किसी को सताना नहीं चाहिए, दयालु स्वभाव होना चाहिए यह हमारी संस्कृति के लक्षण है यदि हम दीनता, युद्ध का त्याग दयना, अपमान करना यह सब मूल्यों के ह्रास के लक्षण दिखाई देते है

रावण तुम वापस आओ

इस नाटक में संस्कृति का नाश है और मूल्यों का भी ह्रास है यह है यह इस नाटक की महत्वपूर्ण समस्या है जिसके कारण समाज और राष्ट्र विश्लेषण का पतन हो चुका है

निष्कर्ष: नव जो समस्या है वह 'रावण तुम वापस आओ' यह डो. शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्यप्रधान नाटक है इस नाटक में हम कुछ भी सीधेपन का नहीं मिलता है इस नाटक में समस्याप्रधान है इस नाटक में जो समस्या है वह आज और समाज में दिखाई देती है

भारतेंदु हरिश्चंद्र - सामान्य परिचय

A) भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का जीवन परिचय :—

1) **जन्म :—** भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। उनके पिता गोपालचंद्र एक अच्छे कवि थे और गिरधरदास उपनाम से कविता लिखा करते थे। ~~1818~~ 1885 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु 7 वर्ष की होगी। भारतेंदु का व्यक्तित्व साहस्य है कि उनकी आँख एक बार बुली तो बंद नहीं हुई। उनके पूर्वज अंग्रेज-भक्त थे उनकी ही कृपा से धनवान हुये थे। हरिश्चंद्र 5 वर्ष के थे तो उनकी माँ की मृत्यु और 10 वर्ष के थे तो उनके पिता का देहांत हो चुका।

2) **शिक्षा :—** इस प्रकार बचपन में ही माता-पिता के सुख से वंचित हो गये। विमाता ने दुख सताया। बचपन का सुख नहीं मिला। संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतंत्र रूप से देखने-सोचने-समझने की आदत का विकास होने लगा। पढ़ाई की विषय-वस्तु और पद्धति से उनका मन उखड़ता रहा। क्वीन्स कॉलेज बनारस में पढ़ना किया, तीन-चार वर्षों तक कॉलेज आने-जाने के पथ पर यहाँ से मन बार-बार भागता रहा। स्मरण शक्ति तीव्र थी, ग्रहण क्षमता अद्भुत। इसलिए परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण होते रहे। बनारस में उन दिनों अंग्रेजी पढ़-लिखे और प्रसिद्ध शिक्षक राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद थे। भारतेंदु शिष्य भाव से उनके यहाँ जाते। उन्हीं से अंग्रेजी सीखी।

GURUKUL Page No.
Date

स्वाध्याय से संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू भाषाएँ सीख ली।
उनको काव्य-प्रतिभा अपने पिता से विरासत में उपहार में मिली थी। 5 वर्ष की अवस्था में उन्होंने दोहा लिखा था।

(3) मृत्यु :—
1885 में अल्पायु में ही मृत्यु हुई.

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) मौलिक नाटक :—
① वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
② प्रेम जोगिनी
③ भारत-दुर्दशा
④ चंद्रावली
⑤ विषस्य-विषमौषधम
⑥ अंधेर-नगरी
⑦ नीलदेवी
⑧ सतीप्रताप

(2) निबंध-संग्रह :—
① नाटक
② कालचक्र
③ कश्मीर कुसुम
④ जातीय कुसुम
⑤ संगीत सार
⑥ हिंदी भाषा

(3) काव्य :—
① प्रेम मालिका
② प्रेम सरोवर
③ प्रेम सरोवर
④ प्रेम-माधुरी
⑤ प्रेम-तरंग
⑥ होली

(7) दानवीरता
(8) तन्मय - वीरता
(9) वसंत
(10) सुमनांजलि

(4) कहानी :—

(1) अद्भुत अपूर्व स्वप्न

(5) यात्रा वृत्तांत :—

(1) सरयूपार की यात्रा
(2) भटिनडा

(6) आत्मकथा :—

एक कहानी - कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

(7) उपन्यास :—

(1) पूर्णप्रकाश
(2) चंद्रप्रभा

मृत्यु - 1885 में हुई

(A) जयशंकर प्रसाद - सामान्य परिचय

जीवन परिचय :—

(1) जन्म —

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी (काशी) में हुआ था वे एक महान कवि, नाटककार, उपन्यासकार और निबंधकार थे, जिन्हें हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रवर्तकों में से एक माना जाता है। उनके पिता का नाम देवीप्रसाद था। बचपन में पिता के मृत्यु हो जाने पर उनकी शिक्षा। घर पर ही हुई

(2) शिक्षा :—

प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा। काशी क्वीस कॉलेज में हुई थी परंतु यह शिक्षा। अत्यंत कालीक था। इन्हे दर्जे में वहां शिक्षा। आरंभ हुई थी। सातवे दर्जे तक ही वे वहां पढ़ पाये। उनकी शिक्षा। का व्यापक प्रबंध घर पर ही किया गया। इन्होंने हिंदी और संस्कृत का अध्ययन इन्होंने किया। प्रसादजी के प्रारंभिक शिक्षक मोहिनीलाल गुप्त थे। इन्होंने वेद, इतिहास, पुराण। तथा साहित्यशास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया था

(3) विवाह :—

प्रसाद जी का पहला विवाह 1909 विंध्यवासिनी देवी के साथ हुआ था उनकी पत्नी को क्षयरोग था। सन 1916 में विंध्यवासिनी देवी का निधन हो गया। उसी समय से उनके घर में क्षयरोग के किटाणु प्रवेश कर गये थे। 1917 में सरस्वती देवी के साथ दूसरा विवाह हुआ। दूसरा विवाह होने पर उनकी पहली पत्नी की साड़ियाँ आदि को उनकी द्वितीय पत्नी ने भी पहना और कुछ समय बाद उन्हें भी क्षयरोग हो गया। और दो वर्ष बाद 1919 में उनका देहांत भी हो गया।

GURUKUL Page No.
Date / /

~~इसे~~ इसके बाद पुनः घर बसाने की उनकी लालसा नहीं थी, परंतु मनुष्य लोगों के समझाने और सबसे अधिक अपनी माँ के प्रतिदिन के शोकमय जीवन को सुखमय के लिए उन्हें बाध्य होकर विवाह करना पड़ा। सिरा विवाह कमलादेवी के साथ हुआ। उनका एकमात्र पुत्र रणशंकर प्रसाद सिसरी पत्नी की ही संतान थी।

(4) मृत्यु :— जीवन में अंतिम समय में वे क्षयरोग से ग्रस्त थे। 1937 - सा.मा.१२ उम्र - 47 उनका देहांत काशी में हुआ।

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) काव्य :—

(1) प्रेम-पथिक
(2) करुणालय
(3) महाराणा का महत्व
(4) चित्राधार
(5) कानन-कुसुम
(6) झरना
(7) आँसू
(8) लहर
(9) कामायनी

(2) कहानी - संग्रह

(1) छाया
(2) प्रतिध्वनि
(3) आकाशदीप
(4) आंधी
(5) इंद्रजाल

GURUKUL Page No
Date

(3) उपन्यास :—

(1) कुंळाव
(2) नतवा
(3) इरावती

(4) नाटक :—

(1) उर्वशी
(2) अग्नि की परिणय
(3) कल्याणी
(4) कामना
(5) राज्यश्री
(6) चंद्रगुप्त
(7) स्कंदगुप्त
(8) ध्रुवस्वामिनी
(9) एक घूँट
(10) अजातशत्रु

(5) निबंध :—

(1) काव्य और कला तथा अन्य निबंध

(6) सम्मान :—

भंगल्या पुरस्कार पारितोषिक कामायनी
को लिए।

इस प्रकार जयशंकर प्रसाद की
यह सामान्य परिचय है।

Date / /
DAV ANAND COLLEGE LATUR 413531

✱ मोहन राकेश का सामान्य परिचय

(A) जीवन-परिचय :—

(1) जन्म :—

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 ई. में पंजाब के अमृतसर शहर में हुआ था। इनके पिता श्री लक्ष्मीचंद गुगलानी वकील थे, परंतु साहित्य और संगीत में वे अधिक रुचि रखते थे। जिसका प्रभाव मोहन राकेश जी पर भी पड़ा। 16 वर्ष की अल्पायु में मोहन राकेश के पिता का निधन हो गया था। इनके पूर्वज सिंध प्रांत के निवासी थे।

(2) शिक्षा :—

मोहन राकेश की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में ही हुई। उन्होंने लाहौर के ओरियन्टल कॉलेज में 'शास्त्री' की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर पंजाब विश्वविद्यालय से अँग्रेजी और हिंदी में एम.ए. किया।

(3) अध्यापन :—

मोहन राकेश ने अध्यापन का कार्य बम्बई, शिमला, जालन्धर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में किया, परंतु इस कार्य में विशेष रुचि न रहने के कारण त्यागपत्र देकर सन 1962-63 में मासिक पत्रिका 'सारिका' का संपादन भी किया। कुछ समय बाद मोहन राकेश जी ने यह कार्य भी छोड़ दिया और स्वतंत्र लेखन का कार्य प्रारंभ किया। आपने सन 1963 से 1972 तक 9 वर्ष तक स्वतंत्र लेखन का कार्य किया।

(4) विवाह :—

GURUKUL Page No
Date / /

मोहन राकेश की प्रथम शादी 1950 में सुशीला से हुई। जो अपने पुत्र के साथ देहरादून में रहती थी। उनकी दूसरी शादी 1960 में पुष्पा नामक महिला से हुई, जो शीघ्र ही टूट गई, जो मूलतः जालंधर की रहनेवाली थी। 1963 में अनीता औलख से तीसरी शादी की राकेश जी दुखी थे। शादी के समय अनीता की उम्र 21 साल की थी। राकेश जी की मृत्यु के बाद वह दिल्ली में कैलाश के पूर्व में रहती है।

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) उपन्यास :—

(1) अंधेरे बंद कमरे
(2) न आनेवाला कल
(3) अंतराल
(4) नीली रोशनी की बाँह

(2) कहानी संग्रह :—

(1) क्वार्टर
(2) पहचान
(3) वारिस
(4)

(3) निबंध-संग्रह :—

(1) परिवेश
(2) बकलम खुद
(3)

(4) यात्रा-विवरण :—

(5) जीवनी संस्मरण —
① समय सारथी

(6) डायरी :—
① मोहन राकेश की डायरी

(7) नाटक :—
① आषाढ़ का एक दिन
② लहरों के राजहंस
③ आधे - अधूरे

(8) एकांकी :—
① अण्डे के छिलके
② दूध और दांत

(9) अनूदित नाटक :—
① मृच्छकटिकम
② शाकुंतलम

मृत्यु :—
3 जनवरी 1972 नई दिल्ली में मोहन राकेश जी की मृत्यु हुई।

GURUKUL
Page No.
Date
SRD COLLEGE OF ARTS LATUR 413531

✱ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : सामान्य परिचय

(A) जीवन - परिचय :—

(1) जन्म :—

15 सितंबर 1927 को बस्ती में विश्वेश्वर दयाल के घर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म हुआ।

(2) शिक्षा :—

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने इलाहाबाद से उन्होंने बी.ए और सन 1949 में एम.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की।

(3) कार्यक्षेत्र :—

1949 में प्रयाग में उन्हें एजी आफिस में प्रमुख डिस्पैचर के पद पर कार्य मिल गया यहां वे 1955 तक रहे। तत्पश्चात आल इंडिया रेडियो के सहायक संपादक पद पर उनकी नियुक्ती हो गई। इस पद पर वे दिल्ली में वे 1960 तक रहे।

सन 1960 के बाद वे दिल्ली से भोपाल रेडियो स्टेशन आ गए 1964 में भोपाल से रेडियो की नौकरी के बाद वे कुछ समय भोपाल एवं रेडियो में भी कार्यरत रहे।

सन 1964 में जब दिनमान पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ तो वात्स्यायन 'अज्ञेय' के आग्रह पर वे पद से त्यागपत्र देकर दिल्ली आ गए और दिनमान से जुड़ गए। 1982 में प्रमुख बाल पत्रिका पराग के संपादक बने। नवंबर 1982 में पराग का संपादन संभालने के बाद वे मृत्युपर्यन्त उससे जुड़े रहे।

GURUKUL Page No.
Date

(B) સાહિત્યિક પરિચય :—

(1) કાવ્ય :—

(1) કાગ કી ઘટિયાં
(2) વાંસ કા પુલ
(3) એક સૂની નાવ
(4) ગર્મ હવા
(5) જુમાનો નદી
(6) જંગલ કા દર્દ
(7) ઘુંટિયાં પર ટેકે લાવ
(8) આઇ મેર સાથ ચલ
(9) આલા જોયલ.

(2) ઉપન્યાસ :—

(1) પુરાલ જુનો કા મસીહ
(2) સોચા હુઆ જલ
(3) ઉડ઼ હુએ રંગ
(4) અન્ધી સડ઼ક

(3) નાટક :—

(1) ગુજરી
(2) લડ઼ાઈ
(3) અબ ગરીબી હટાઓ
(4) જલ ભાત આયગા

(4) આત્મા - સંસ્મરણ :—

(1) જુહ્ન રંગ જુહ્ન ગંધ

(5) બાલ કવિતા :—

① વતૂના કા જૂના
② મહંગૂ કી દાઈ

⑥ **વામ નાટક :—**

① મેં - મેં બેં - બેં
② ભાવ કી નાક

⑦ **સંપાદન :—**

① રામરોટ
② ચૂંવરા
③ અંધેરે કા હિસાબ
④ રક્તવીજ

મૃત્યુ :— 23 સિતંબર 1983 કો નઈ દિલ્લી મેં ઉનકા નિધન હો ગયા।

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. नाटक के तत्व, प्रकार, अवधारणा.
2. 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक की कथावस्तु
3. शंकर शेष जी के नाटक के पात्र एवं चरित्र-चित्रण.
4. शंकर पुणतांबेकर का नाटक 'रावण तुम वाहर आओ' की कथावस्तु (कथानक)
5. 'रावण तुम वाहर आओ' नाटक की समस्या या उद्देश्य.
6. शंकर पुणतांबेकरजी का परिचय
7. ~~'रावण तुम वाहर आओ'~~ 'रावण तुम वाहर आओ' इस नाटक के पात्र या चरित्र-चित्रण.
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश का सामान्य परिचय.